खण्ड: XV अंक: 3 व 4 मार्च – अप्रैल, 2003

चैतन्य लहरी

सहजयोग आपकी पहली और सर्वोपरि जिम्मेदारी है। आपको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि ये कार्य क्या है। ये अत्यन्त महान कार्य है – पूरे विश्व को परिवर्तित करना – मेरा यही स्वप्न है।

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

1- श्री गणेश पूजा, फ्रैंकफर्ट जर्मनी, 2002

6- श्री माताजी की दूल्हों से बातचीत, कबैला, 15-09-2002

10- श्री माताजी की दुल्हनों को सीख, कबैला, 15-09-2002

15- नवरात्रि पूजा, लॉस एंजलिस, 27-10-2002

30- दिवाली पूजा, लॉस एंजलिस, 03-11-2002

39- श्री माताजी का एक पत्र, 1982

42- सूर्यसम आत्मा, 18-06-1983

चैतन्य लहरी

प्रकाशक
वी.जे. नलगीरकर
162 – ए, मुनीरका विहार, नई दिल्ली – 110067

मुद्रक
प्रिंटो–ओ–ग्राफिक्स
नई दिल्ली

सदस्यता के लिए कृपया इस पते पर लिखें :–
श्री ओ.पी. चान्दना
एन – 463 (G-11) ऋषि नगर, रानी बाग,
दिल्ली – 110034
फोन : (011) 27013464

सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पते पर भेजें :

चैतन्य लहरी
सहजयोग मंदिर
सी – 17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया
नई दिल्ली – 110016

श्री गणेश पूजा

फ्रैंकफर्ट जर्मनी, सितम्बर, 2002

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

इतने समय के पश्चात् यहां वापस आना बहुत ही सुखद है। जब जब भी मैं आई आप सभी लोग यहां एकत्र हुए। यह सभागार काफी विशाल है। यहीं पर हम एकत्र हुए थे और इस प्रकार से सहजयोग चलने लगा। जर्मनी और आस्ट्रिया के लोगों के लिए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यहीं लोग युद्ध में सम्मिलित थे और अब आप लोग मेरे साथ युद्ध में हैं। हमें युद्ध लड़ना है, आसुरी शक्तियों से युद्ध करना है। आप जानते हैं कि विश्व कैसा है। हमें इससे युद्ध करना है और इसे अज्ञानता मुक्त करना है। इस कार्य के लिए आप बहुत बड़ी सहायता हैं क्योंकि हमें मानव का परिवर्तन करना है ताकि मानव शीघ्रातिशीघ्र अच्छें बन सकें। एक बार यदि वे आत्म–साक्षात्कार ले लें तो परिवर्तन घटित होने लगेगा।

अब इंग्लैंड और इटली में भी ये लोग गलियों में जाकर आत्म–साक्षात्कार दे रहे

हैं। गलियों में आत्म-साक्षात्कार दे रहे हैं और हजारों लोग आत्म- साक्षात्कारी हो गए हैं। यह बहुत बड़ी बात है क्योंकि एक बार जब आपको आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो जाता है तो आप आत्मा बन जाते हैं। तब सारे सद्गुण आपमें आ जाने चाहिएं। आपमें यदि कोई बुराई हो भी तो वह भी चली जाएगी।

यह सर्वत्र इतना तेजी से फैल रहा है और सभी देशों में फैलना भी चाहिए। आपको लड़ने झगड़ने की आवश्यकता नहीं हैं क्योंकि आपको दैवी सहायता प्राप्त हो गई है यह दैवी सहायता आपको हर समय प्राप्त है – हर समय। और यह बात समझी जानी चाहिए कि परमात्मा हमें इसलिए सहायता करते हैं कि हम मानव को अन्तर्परिवर्तन करके महानता की ओर ले जाएं।

हम ऐसे ही हैं। यहाँ पर हम इसलिए आए है कि आपके पास एक स्थान होना चाहिए, सहजयोग के लिए एक आश्रम होना चाहिए। वहाँ पर मैं सहजयोगियों के अतिरिक्त किसी को भी नहीं चाहती क्योंकि हम नहीं जानते कि लोग कितने गन्दे हैं, वो कितनी गन्दगी करते हैं! आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि वो किस सीमा तक जा सकते हैं और वास्तव में आपको हानि पहुँचा सकते हैं। वे केवल नकारात्मक ही नहीं हैं बल्कि कभी-कभी तो वो शैतान बन जाते हैं और आपके बच्चों को, आपके परिवारों को नष्ट करने का प्रयत्न करते हैं ऐसे सभी कार्य वो करते हैं, अतः आपको उनसे कुछ नहीं लेना-देना, उनसे दूर रहें क्योंकि अब आप सब लोगों का शुद्धिकरण कर दिया गया है। जो लोग शुद्ध हो गए हैं वो कीचड़ से लथपथ लोगों में घुलते-मिलते नहीं। क्या स्वच्छ लोग ऐसा करते है? अतः अपने मस्तिष्क में अवश्य इतना विवेक बनाए रखें कि सहजयोग को अन्य चीज़ों से किसी भी कीमत पर नहीं मिलाना। बहुत समय से मैं ये बताने का प्रयत्न कर रही हूँ कि स्वयं को इनसे अलग बनाए रखें, परन्तु कई बार लोग ऐसा नहीं करते और बहुत कष्ट उठाते हैं।

हमारे चहुँ ओर सभी प्रकार की आसुरी और शैतानी शक्तियाँ हैं। मैं नहीं जानती कि वो क्या कर रही हैं परन्तु उन्होंने लोगों का कोई हित तो नहीं किया, कोई हित नहीं किया, बिल्कुल कोई हित नहीं किया। ज़रा देखें कि इन दिनों क्या हो रहा है – सभी प्रकार की लड़ाईयाँ-झगड़ें और हत्याएँ यही सब हो रहा है। अतः आपको ये जान लेना आवश्यक है कि हम अत्यन्त भयानक कलियुग में है जिसका हमने सामूहिक रूप से मुकाबला करना है। बच्चों को देखें, वे कितने सामूहिक हैं। आप सबको भी सामूहिक होना पड़ेगा। सभी को प्रेम करना आवश्यक हैं, आस-पास के सभी सहजयोगियों को। उनके दोष ढूँढने की कोशिश न करें, उनसे झगड़ने का प्रयत्न

न करें, क्योंकि मैं जो कार्य कर रही हूँ वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मैं लोगों में अन्तर्परिवर्तन करने का प्रयत्न कर रही हूँ ताकि वे अच्छे और भले बन सकें उनसे कुछ लेने के लिए नहीं, उन्हें कुछ देने के लिए ताकि वे अच्छे लोग बन जाएं। हमारे यहाँ अत्यन्त अच्छे और भले लोग होना आवश्यक है ऐसे लोग जो न तो घृणा करते हैं और न जिनमें किसी प्रकार का लालच है। लोग पागलों की तरह से लालची हैं। जहाँ लोग धन कमा सकते थे वहाँ उन्होंने सभी को धोखा देकर पैसा बनाया और इस कारण से अब उनके बच्चे कष्ट उठाएंगे। अतः आप सबके विषय में मेरी इच्छा है क्योंकि आप ही लोग इस महान युद्ध में मेरी सहायता कर सकते हैं असुरों के साथ युद्ध में। स्वभाव से ही ये लोग दुष्ट हैं और वो आपको बर्बाद करना चाहते हैं उनके हाथों में खिलौना न बनें, मज़बूत बनें। आप पृथ्वी पर भौतिक चीज़ें आदि एकत्र करने के लिए नहीं आए हैं। आप तो यहाँ उच्च दर्जे के सहजयोगी बनने के लिए आए हैं।

एक अन्य बात यह है कि यदि आप अपने अन्दर आनन्द अनुभव नहीं करते, आपमें यदि आनन्द का अभाव है, तो आप अन्य लोगों को कष्ट देंगे। अतः आपके लिए सर्वोत्तम उपाय यह है कि आप ध्यान–धारणा करें, आलोचना न करें, अपना मस्तिष्क न लगाएं, परन्तु ध्यान करें। ध्यान धारणा द्वारा आप जान जाएगें कि सहजयोग का, चैतन्य लहरियों का, आनन्द किस प्रकार लेना है। यह स्थिति होनी ही चाहिए। मानसिक गतिविधि समाप्त होनी आवश्यक है। दूसरों को आयोजित करने का प्रयत्न छोड़ दें। अन्य लोगों को भाषण देने का प्रयत्न न करें, परन्तु जो कुछ भी आप करते हैं उसका अन्तरअवलोकन करें। स्वयं देखें कि आपमें क्या कमी है और आप कौन–कौन से गलत कार्य कर रहे हैं।

(बच्चो कृप्या शान्त रहो। ठीक है? आप यदि शान्त नहीं होगें तो हम आपको दूर भेज देगें। मैं नहीं चाहती कि तुम्हें दूर भेजा जाए। ठीक है?)

यहाँ भी आप देखें, ये बच्चे जर्मन हैं। अतः स्वाभाविक रूप से ये जानते हैं कि हल्ला किस तरह मचाना है। इसीलिए मैंने उन्हें यहां बुलाया था। अब वे बहुत अच्छे बच्चे बन जाएंगे। बहुत ही अच्छे बच्चे। आप ऐसे ही बनेंगे न?

केवल शान्त हो जाना ही सभी कुछ नहीं है। अच्छा बन जाना ही काफी नहीं है। आपको अन्य लोगों को भी अच्छा बनाना है। अन्य लोगों को सुन्दर व्यक्ति बनाना है। अपने चित्त से और अपने कार्य से हमें पूरे विश्व का सौन्दर्यकरण करना है। अब समस्या यह है कि सहजयोग में आने के पश्चात् भी लोग गलत चीज़ें अपना लेते हैं। ऐसे किसी व्यक्ति को बढ़ावा न दें। इसके विपरीत उसे समझाएं

कि सहजयोग सामूहिक गतिविधि है। हमारा व्यक्तिगत कुछ भी नहीं है। हमें गतिशील रहना है और हर समय मिल कर रहना है। सामूहिक होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा उस सामूहिक जीवन का आनन्द लेना भी। मिलकर रहने का आनन्द यदि आप अनुभव कर सकते हैं तो आपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। क्योंकि ऐसी स्थिति प्राप्त करने के पश्चात् आप अन्य लोगों को भी अपने साथ मिलाएंगे और आत्मा होने का आनन्द उन्हें भी प्रदान करेंगे। एक बार जब वे आत्मा बन जाते हैं तो सभी कुछ परिवर्तित होने लगता है। सामूहिक रूप से यदि आप मिल कर रहते हैं और सारे कार्य करते हैं तो बड़ी तेजी से आपका उत्थान होता है। जो लोग पृथक होने की बातें करते हैं वह पागलपन है। ऐसी बातों को बिल्कुल न सुनें। बेहतर होगा कि इन्हें नियन्त्रित करें। कभी–कभी हमें एकजुट होना पड़ता है। हम एक–दूसरे से अलग नहीं हो सकते। ऐसे सभी प्रयत्नों को नष्ट कर दिया जाएगा। आप लोग देखें कि विश्व में चीज़ें किस प्रकार चल रही हैं, किस प्रकार सभी कुछ कार्यान्वित हो रहा है?

आधुनिक कार्य के सौन्दर्य को आप समझें। आप एक ऐसे समय पर अवतरित हुए हैं जब आपका अन्तर्परिवर्तन हो सकता है। ऐसे समय पर आप जन्में हैं, जब आप आत्मा बन सकते हैं। सभी ने इसका प्रयत्न किया परन्तु कुछ भी कार्यान्वित नहीं हुआ। आप जानते हैं कि आत्म–साक्षात्कार किस प्रकार दिया जाता है। अपनी कुण्डलिनी की सहायता से हम सभी कुछ कार्यान्वित कर रहे हैं। आप यह भी जानते हैं कि क्या करना है। आप आत्म–साक्षात्कार देना जानते हैं। चैतन्य लहरियाँ पहचानना जानते हैं। सभी कुछ एकदम से आपमें होने लगता है। तब आप तुरन्त महसूस करते हैं कि अभी तक आप जो भी कुछ कर रहे थे वह मानवता के लिए बहुत ही हानिकारक था। अब मैं आप लोगों पर सभी कुछ छोड़ती हूँ। आप सभी इतने विवेकशील और इतने अच्छे लोग हैं। आप सभी सहजयोग में आए हैं। मैं जब–जब भी यहाँ आई आप सभी यहाँ उपस्थित थे। मुझे प्रसन्नता है कि आज सभी देश यहाँ हैं। पता लगते ही तुरन्त आप यहाँ आ गए। आप लोग कितना मुझे प्रेम करते हैं! वास्तव में यह प्रशंसनीय बात है। आप सभी लोगों ने अपना प्रेम दर्शाया है। पता नहीं आप सब लोग कहां कहां से आए हैं? मैं इतने कम समय के लिए यहाँ आई हूँ। अतः परमात्मा आपको आशीर्वादित करें और आपको विवेक प्राप्त हो। यह बात हमेशा अपने मस्तिष्क में रखें कि अब आप ने पूरे विश्व को भले और आध्यात्मिक लोगों के विश्व में परिवर्तित करना है। अतः यह आपकी जिम्मेदारी है। इसके लिए आपको क्या करना है,

यह बात आप जान जाएगें। आप सभी को बहुत जिम्मेदार बनना है। बहुत ही जिम्मेदार लोग और यह समझने का प्रयत्न करना है कि आप सहजयोग के लिए क्या कर रहे हैं। आजकल बहुत से नए चेहरे नज़र आते हैं, इन्हें देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। निःसन्देह मैं बहुत से आस्ट्रियन लोगों से मिली, जर्मन लोगों से मैं पहले मिल चुकी हूँ। परन्तु अब मुझे बहुत से अन्य देशों के लोग भी नज़र आते हैं। इनकी सहायता करके आपने बहुत ही मधुर कार्य किया है।

समर्पण ही महत्वपूर्ण कार्य है। लोगों के साथ यही समस्या है। वे स्वयं को सहजयोग के प्रति समर्पित नहीं कर पाते। यही आपका जीवन है। अच्छाई का यही सबसे सुन्दर इनाम है। अतः आप लोग समर्पित होने का प्रयत्न करें और, आप हैरान होगें कि, समर्पण मात्र से आप पूर्ण आनन्द और पूर्ण प्रसन्नता एवं शान्ति प्राप्त कर सकते है। ऐसा करना बहुत आवश्यक है। और यही बताने के लिए मैं आई हूँ कि कृपा करके समर्पित होने का प्रयत्न करें।

जहाँ तक समर्पण का प्रश्न है मैं यह नहीं कह सकती कि किस प्रकार आप स्वयं को विवश करें। परन्तु आप निर्विचार समाधि में चले जाएं। निर्विचार समाधि की अवस्था में आप ध्यान करें और तब, मुझे विश्वास है, अपने पूरे प्रेम और आशीष के साथ, मुझे विश्वास है, आप समर्पित हो जाएंगे। केवल समर्पित ही नहीं होगें अन्य लोगों को भी परिवर्तित करके इस भले कार्य को करने की प्रेरणा देंगे। आप सब में यह गुण है। इसे अपने अन्दर और विकसित करें तथा यह देखने का प्रयत्न करें कि जीवन में परिवर्तित होने के लिए कितने अन्य लोगों की आपने सहायता की है।

आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री माताजी की दूल्हों से बातचीत

कबैला, 15-09-2002

मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ कि आप सबने सहजयोग में विवाह करने का निश्चय किया है। परन्तु अब आप पर कुछ जिम्मेदारियाँ भी आ जाएंगी। यह विवाह अन्य विवाहों की तरह नहीं है कि आज आप विवाह करें और कल तलाक ले लें। यहां ऐसा कुछ भी नहीं है। सहजयोग में आप इसलिए विवाह करते हैं क्योंकि हम सहजयोग को दृढ़ करना चाहते हैं। आपकी पत्नी होगी जो आपकी देखभाल करेगी, आपके प्रति करुणा एवं प्रेममय होगी क्योंकि वह सहजयोगिनी है। आपको भी उसके प्रति सुहृद होना है। उस पर प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न न करें। अपने विचार उस पर थोंपने का प्रयत्न न करें। देखें कि वह क्या चाहती है। आपको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि किस प्रकार पत्नी से प्रेम करना है। इसके बिना विवाह संभव न होगा।

सहजयोग में एक बार यदि आप तलाक ले लेते हैं तो दुबारा हम आपका विवाह

नहीं करेंगे। अब हमने इस बात का निर्णय कर लिया है। या किसी भी प्रकार से यदि आप अपनी पत्नी को त्याग देते हैं या छोड़ देते हैं या इस विवाह के विषय में कोई गैर जिम्मेदाराना कार्य करते हैं तो आपके लिए सहजयोग में कोई स्थान न रहेगा। तो अभी एक बार ही निश्चय कर लें कि अब आप विवाह कर रहे हैं। यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। हम चाहते हैं कि सहजयोग विवाह सफल हों और आप सब अत्यन्त प्रसन्न विवाहित जीवन का आनन्द लें। प्रभुत्व जमाने, नियन्त्रण करने का कोई लाभ नहीं है। एक–दूसरे के साहचर्य का आनन्द उठाना है क्योंकि आपकी पत्नी भी सहजयोगिनी है और आप भी सहजयोगी हैं। आप यदि सहजयोगी न होते तो हम आपका विवाह न करते। हम प्रबुद्ध लोग हैं, उच्च चेतना के लोग हैं। हमारा जीवन आध्यात्मिक है। अपने जीवन में हमें दर्शाना है कि किस प्रकार हम उन लोगों से भिन्न आचरण करते हैं जो सदैव लड़ते रहते हैं और सभी कुछ बिगाड़ने में लगे रहते हैं ताकि आपके अत्यन्त अच्छे बच्चे हों। आप उनकी तथा उनके परिवार की देख–भाल कर सकें, यह आपका पहला कार्य है। निःसंदेह आपमें से कुछ लोग अपने कार्य में बहुत व्यस्त होगें, यह ठीक है, परन्तु पत्नी को प्रेम करना, उसकी देखभाल करना और बच्चों की देखभाल करना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ऐसा यदि आप नहीं कर सकते तो आपको अविवाहित ही रहना चाहिए, विवाह करना ही नहीं चाहिए। आप यदि विवाह कर रहे हैं तो अपनी पत्नी की जिम्मेदारी ले रहे हैं। वह किसी की बेटी है और उसका पिता अपनी बेटी आपको दे रहा है।

अभी तक सहजयोग में लड़कों का व्यवहार बहुत अच्छा रहा है। अब आप लोगों में भी यह विवेक एवं सूझ–बूझ होनी चाहिए कि आप यहां पर सहजयोगी बच्चे उत्पन्न करने के लिए आए हैं ताकि सहजयोग की सहायता हो सके। क्योंकि हमारा लक्ष्य विश्व को परिवर्तित करना है। संसार का उद्धार करना होगा। विवाह के विषय में यदि आपकी सूझ–बूझ निम्न स्तरीय है तो इससे काम न चलेगा। अतः मुझे आपसे अत्यन्त विनम्र एवं सम्मानमय अनुरोध करना है कि यदि आप सहजयोग के वैवाहिक जीवन में प्रवेश कर रहे हैं तो आपको अपनी जिम्मेदारी की समझ आवश्यक है। यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, यह जिम्मेदारी पूरे विश्व के लिए है, क्योंकि हमें पूरे विश्व को परिवर्तित करना है। यदि आप अपने देश के या अन्य देशों के पतियों की तरह से व्यवहार करेगें तो सहजयोग में विवाह करने का क्या लाभ होगा, तब तो आप बाहर जा कर अच्छा सा विवाह करें। परन्तु यदि आप सहजयोग में विवाह कर रहे हैं तो आपको यह समझ लेना आवश्यक है कि यह भयानक आसुरी शक्तियों, अन्याय

तथा कुप्रबन्धन के विरुद्ध भयानक जंग है। हम एक अत्यन्त सुन्दर विश्व का सृजन करना चाहते हैं और इस सुन्दर विश्व को बनाने के लिए हमें ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो बहुत सुन्दर हों और जो सभी का सम्मान करते हों। अतः बार–बार मेरा आपसे यही अनुरोध है कि आप लोग अत्यन्त भले, विनम्र एवं सम्मानमय पति बनें। अन्य लोगों का अनुसरण न करें। मुझें बड़ी अजीबो–गरीब बातें सुनने को मिलती हैं, मैं हैरान थी कि सहजयोग में विवाह करके लोग ऐसे किस प्रकार बन सकते हैं! हमें पता चला कि वो पगला गए थे और पागलों की तरह से आचरण कर रहे थे। अतः आक्रामकता आदि चीज़ों की आज्ञा नहीं है। इस लड़की से आप पूरे विश्व के हित के लिए विवाह कर रहे हैं, केवल अपने बच्चों के और अपने परिवार के लिए नहीं। पूरे विश्व के सम्मुख आपको यह दर्शाना होगा कि आप अत्यन्त विवेकशील, बुद्धिमान और विकसित व्यक्ति है। यह अविकसित लोगों का व्यवहार नहीं है। अतः यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप दर्शाएं कि आप अत्यन्त परिपक्व व्यक्ति हैं, अत्यन्त ज्योतिर्मय हैं और पूरे विश्व को ज्योतिर्मय बना सकते हैं।

पत्नी क्योंकि किसी अन्य परिवार, या हो सकता है कि अन्य देश से आ रही है, इसलिए सोच–समझ में अन्तर हो सकता है। अतः उसे समझाएं, उससे बातचीत करें और उसे बताएं, 'ठीक है, आओ बैठो।' आपा खोने या क्रोधित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। किसी भी प्रकार का उदाहरण देना ठीक नहीं होता, इससे कोई भी लाभ न होगा। मैं देखना चाहती हूँ कि आप सब अपनी पत्नियों के प्रति कितने नेक हैं, परन्तु मैं यह भी नहीं कहती कि आप उन्हें बिगाड़ दें। ऐसा बिल्कुल न करें, मैंने उनसे भी बता दिया है। उनकी आदतें न बिगाड़ें, उन्हें भी सहजयोग के शुभ रास्तों पर चलने दें और सहजयोग के अच्छे कार्यकर्त्ता बनने दें। वो बहुत अच्छी माताएं बनेंगी और ऐसे बच्चों को जन्म देंगी जिनकी हमें आवश्यकता है जो इस विश्व को पूरी तरह से परिवर्तित कर देगें। अतः मुझे आशा है कि आप यदि मुझसे सहमत हैं तो ठीक है और यदि नहीं हैं तो अब भी आप इस विवाह को छोड़ सकते हैं। मैं इस बात का बुरा नहीं मानूंगी, परन्तु विवाह के पश्चात् यदि आप दुर्व्यवहार करते हैं या अपनी पत्नी को तलाक देते हैं तो सहजयोग में आपके लिए कोई स्थान न होगा। हम यहां आपको बने रहने नहीं की आज्ञा न देंगे।

क्या आप सबको मेरी बात स्वीकार है? ठीक है जिसे भी मेरी बात स्वीकार नहीं वह हाथ उठाएं। धन्यवाद। धन्यवाद। यह जानकर मैं बहुत प्रसन्न हुई। अतः आपको विवेकशील बनना होगा और अपनी पत्नी को बताना होग, 'देखो चीज़ें इस

प्रकार से हैं, ऐसे है।' उन्हें यह बाते समझने दें कि आप विवेक में उनसे आगे हैं। इतना ही नहीं आप अत्यन्त विवेकशील हैं। आध्यात्मिक रूप से आप उन्हें समझें तब वे आपकी बात को सुनेंगीं। वे अपने माता–पिता को, परिवार को, देश को, छोड़ कर आ रही हैं। अतः उनके प्रति अत्यन्त भद्र एवं सुदृढ़ बनें और किसी भी बात के लिए उन पर नाराज़ न हों। किसी भी बात के लिए उन पर बिगड़ें नहीं। अपने पूरे जीवन में मैं कभी क्रोधित नहीं हुई। इससे पता लगता है कि लोग बेकार में ही नाराज होते हैं। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, शान्त रहें। कोई चीज़ यदि आपको अच्छी नहीं लगती तो चुप रहें। किसी भी प्रकार का क्रोध या गुस्सा न दर्शाएं। आपको दिखाना होगा कि आप विवेकशील एवं गरिमामय व्यक्ति हैं। कुछ पतियों को मैंने चिल्लाते हुए, चीज़ें फेंकते हुए तथा इस प्रकार के अन्य कार्य करते हुए देखा है। आप यदि सम्मान के योग्य नहीं हैं तो पत्नी कैसे आपका सम्मान करेगी, आपको सम्मानमय व्यक्ति बनना होगा, पत्नी के प्रति करुणामय एवं भद्र होना होगा, मैं उन्हें बिगाड़ने के लिए नहीं कह रही। कहीं यदि आपको गलती दिखाई देती है तो अपने साथ बैठाकर उसे बताएं कि सहजयोग दृष्टिकोण से यह बात ठीक न होगी। ठीक है इसी कारण से इन बीते वर्षों में मैनें आपसे प्रतीक्षा करवाई, अब आप बड़े हो गए हैं और समझते हैं कि आपके जीवन का लक्ष्य क्या है। आप सबका अत्यन्त धन्यवाद। परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

देखें कि यह सार्वभौमिक है। हम सभी सार्वभौमिक हैं और हमें अपनी सर्वव्यापी सूझ–बूझ के विवेक को दर्शाना है कि हम इस प्रकार विश्वभर के सभी देशों से आए सब लोगों का आनन्द लेते हैं वे सभी हमारे, भाई–बहन हैं। ठीक है?

आप सबका हार्दिक धन्यवाद।

श्री माताजी की दुल्हनों को सीख
गणेश पूजा
15 सितम्बर, 2002, कबैला

आप सबको इतनी सुन्दर वेश–भूषा में विवाह के लिए उद्यत देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। अपने दृष्टिकोण को ठीक रखना आवश्यक है। आप सबको अत्यन्त प्रसन्न रहना है और अपने पतियों को भी प्रसन्न रखना है। आप लोगों की प्रसन्नता ही बच्चों को भी प्रसन्नता प्रदान करेगी।

अब एक बात की आप सबको चेतावनी देती हूँ कि कभी भी अपने पिछले जीवन की गलतियों के विषय में अपने पति को न बताएं। इस बारे में कोई बात नहीं होनी चाहिए, इसकी कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि अब आप सहजयोगी हैं। आप परिवर्तित लोग हैं पहले जो भी घट चुका उसके बारे में बातचीत करने की या उसे कुछ बताने की आवश्यकता नहीं हैं। वर्तमान और भविष्य की बातें करें, ठीक है? विवेकशील बनें। आपकी विवेकशीलता ही आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय

बनाएगी। आप यदि विवेकहीन हैं, बुद्धिहीन हैं तो विवाह असफल हो जाएंगे। मैंने देखा है कि कुछ लड़कियां अपने पतियों पर बहुत रौब झाड़ती हैं।प्रभुत्व जमाने की कोई आवश्यकता नहीं, पति से प्रेम करना ही प्रभुत्वशाली होना है। अतः सर्वोत्तम उपाय पति को प्रेम करना उसकी देखभाल करना तथा अन्य सभी आवश्यक कार्य करना है। ये दर्शाने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं कि आप किसी बेहतर समाज से हैं या बेहतर संस्कृति और बेहतर पारिवारिक पृष्ठभूमि से हैं। केवल आप स्वयं ही यह दर्शा सकती हैं कि आप वास्तव में अच्छी व्यक्ति हैं और आपकी अच्छाई ही उसके दिल को जीतेगी। अतः केवल पत्नी ही विवाह को बिगाड़ने के लिए जिम्मेदार होती है और मुझे ये बात स्पष्ट बतानी है कि अब भी यदि विवाह के विषय में आप मन में सोच रही हैं कि आपका साथी अच्छा नहीं है तो अभी आप पीछे हट जाएं। बाद में अपने पति के दोष न खोजती रहें। पुरुष पुरुष होते हैं और महिलाएं महिलाएं, पुरुष महिलाएं नहीं हो सकते। परन्तु आप उन्हें समझा सकती हैं कि महिलाओं का भी सम्मान होना चाहिए। ठीक है? ये सब कुछ आपको अपने आचरण से दर्शाना है। आपका आचरण यदि अच्छा है तो वे आपका सम्मान करेंगे। परन्तु आपका व्यवहार यदि बचकाना है, आक्रामक है तो कोई भी पुरुष आक्रामक महिला की सराहना नहीं कर सकता। अतः आप लोगों को आक्रामक नहीं होना चाहिए। जो भी कुछ वह कहता है उसे सुनना चाहिए और सहमत होना चाहिए।

निःसन्देह कुछ मूल चीज़ें हैं। अन्यथा छोटी–छोटी चीज़ों के लिए अपने पति पर प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। ऐसा करना सहजयोगी का चिन्ह नहीं है। सहजयोगिनी को तो अपने प्रेम, सूझबूझ, एवं विवेक से अपने पति को जीतना है। उस पर प्रभुत्व जमाकर नहीं। यह बात हमें समझ लेनी चाहिए कि प्रभुत्व जमाने की प्रवृत्ति के कारण बहुत से विवाह टूट गए।

दूसरी बात ये है कि आप अपने माता–पिता, परिवार, अपने देश से जुड़े हुए हैं अब इन्हें भूल जाएं। अपने पति के परिवार, अपने पति तथा उसके इर्द–गिर्द की चीज़ों से जुड़ जाएं। क्योंकि अब भी यदि आप अपने परिवार के मोह में फंसी हुई हैं तो आप अपने संबंध बिगाड़ लेंगी। इस कारण से मैंने बहुत से जोड़े टूटते हुए देखें हैं। एक लड़की हमेशा अपने पिता के विषय में चिंतित रहती थी क्योंकि उसका व्यापार चौपट हो गया था। इस प्रकार से उसने अपने जीवन को नर्क बना लिया। उसका पति कहीं चला गया और उसने कुछ अन्य करना चाहा और इस प्रकार वह बीच में ही लटकी रह गई। उसे अपने पिता के घर वापिस जाना पड़ा और तब उसे पता चला पिता

के घर में रहना कितना कठिन है।

अतः यह आपका घर है, आपका पति है, आपने किसी अन्य पुरुष या महिला को सहायता के लिए खोजते नहीं फिरना। आप स्वयं ही अपनी सहायता कर सकते हैं। कुछ लड़कियों का हमें बहुत गलत अनुभव हुआ है। अपने पतियों को छोड़कर अपने बच्चों के साथ अपने माता-पिता के घर लौट आई। क्या उनका परिवार पूरा जीवन उन्हें पालेगा? कौन उनकी देखभाल करने वाला है? अतः अपने मस्तिष्क का उपयोग करें या कभी ये दर्शाने की कोशिश न करें कि आप कोई बहुत बेहतर ऊँची या बढ़िया चीज़ हैं। जो भी बात कहें उससे विनम्रता टपके। जितना अधिक आप विनम्र होंगी उतना ही अच्छा है। अक्खड़ स्वभाव महिलाओं को शोभा नहीं देता। ऐसी महिला अच्छी नहीं लगती। मैं नहीं जानती कि वह कैसी लगती है? कभी-कभी तो वह घोड़े जैसी लगती है। अतः बेहतर हो कि आप विनम्र, सुहृद एवं भद्र हों और प्रमाणित करें कि आप बहुत अच्छे स्वभाव की इन्सान हैं, ठीक है?

एक अन्य चीज़ मैंने आप सबको बतानी है क्योंकि आप सब पश्चिम से हैं और पश्चिमी महिलाएं धन लोलुप होती हैं। अब तो भारतीय महिलाएं भी ऐसी बन गई हैं। उनको भी कार चाहिए, घर चाहिए, ये चाहिए, वो चाहिए। आपको किसी भी चीज़ की आकांक्षा नहीं होनी चाहिए। सभी कुछ आपने अपने परिवार और पति को देना है। आपको कुछ नहीं चाहिए। यही आपका सौन्दर्य हैं, यही आपकी सज्जा है। यही आपको सौन्दर्य प्रदान करेगी। परन्तु यदि आप इच्छाओं के पीछे-पीछे भागते रहेंगे तो इनका कोई अन्त नहीं, विशेष रूप से पाश्चात्य बुद्धि के लिए। पाश्चात्य महिलाएं बहुत ही धन लोलुप हैं और उन्होंने बहुत सी समस्याएं खड़ी की हैं। मैं नहीं जानती कि उनसे क्या कहूं। अतः आपको धन-लोलुप नहीं होना चाहिए। आपको प्रेम लोलुप होना चाहिए। भिन्न तरीकों से अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करें, अच्छा खाना बनाकर, अपने पति के लिए अच्छा बिस्तर बनाकर, घर का ठीक प्रकार से आयोजन करके और हर चीज़ भली-भांति रखकर। क्योंकि पत्नी यदि सुव्यवस्थित नहीं होगी तो घर भी अव्यवस्थित ही रहेगा, घर की देखभाल करना पति का कार्य नहीं है। अपने घर को और अपने कमरे को यदि आप ठीक-ठाक रखेंगी तो इसके सौन्दर्य का आनन्द लेंगी। यह सब करने में आपको आनन्द आएगा। परिवार के लिए कार्य करने का आनन्द लें, विशेष रूप से अपने पति के लिए कार्य करने का। छोटी-छोटी चीज़ें उसे सुख एवं प्रसन्नता प्रदान कर सकती हैं क्योंकि दफ्तर ही में वह इतना थक जाता है। थका थकाया जब वह घर आता है तो आप उसके पीछे पड़ जाती हैं। ऐसा करना बहुत गलत है। दृष्टिकोण

को इस प्रकार बदला जाना चाहिए कि, हमें कुछ नहीं चाहिए। हमारे पास सभी कुछ है। हम सहजयोगी हैं। हम पूर्णतया सन्तुष्ट हैं। परन्तु यदि आप मांगें करती चली जाएंगी तो बहुत कठिनाई होगी, यह बात मैं आपको बता सकती हूँ।

कुछ लड़कियों के साथ मुझे बहुत बुरा अनुभव हुआ। हाल ही में आस्ट्रिया की तीन लड़कियाँ आस्ट्रिया वापिस चली गईं। लज्जाजनक! आस्ट्रिया का कोई व्यक्ति यहाँ है? नही? परमात्मा का शुक्र है। तुम आस्ट्रिया से हो? अब सावधान हो जाओ। ये तीनों लड़कियाँ बच्चों के साथ वापिस आ गई हैं और पति इतना घबराया हुआ है कि हर शनिवार, इतवार को उसे पिता के घर जाना पड़ता है। आने जाने पर ही वह सारा पैसा खर्च कर देता है। इसमें कोई विवेक दिखाई नहीं देता। आप देखें कि घरेलू महिला केवल परिवार को ही नहीं उन्नत करती परन्तु सूझ–बूझ एवं यश भी लाती है। अधिक कष्ट उठाने वाली कोई बात नहीं है। केवल सूझ–बूझ की आवश्यकता है। आप यदि बुद्धिमान हैं तो कुछ घटना यदि हो भी जाए तो उसके प्रति आप अत्यन्त विवेकशील, सन्तुलित, जिम्मेदारी पूर्ण रवैया अपनाती हैं। जहाँ तक परिवार और बच्चों का संबंध है पत्नी को पति से कहीं अधिक जिम्मेदार होना होगा। परन्तु यदि आप गर्ममिजाज़ हैं तो परमात्मा ही आपके और आपके पति के मालिक हैं।

अतः गर्ममिजाज़ी महिलाओं को शोभा नहीं देती। आप यदि क्रोधी स्वभाव की हैं तो बहुत जल्दी आप बूढ़ी हो जाएंगी, बहुत ही शीघ्र आप वृद्धा लगने लगेंगी। आपमें यदि अहं है और अपने आप को यदि आप बहुत बड़ी चीज़ मानती हैं तो भी ऐसा ही होगा। अतः सर्वोत्तम चीज़ तो ये है कि एक नन्ही बालिका की तरह व्यवहार करें। ऐसी बालिका की तरह जो अपने पति को प्रेम करने के लिए, उसकी देखभाल करने के लिए उसको मातृत्व प्रदान करने के लिए उसके घर में आई है। आपको ये सोचना है कि आप उसकी माँ हैं और पति तो कभी–कभी, बेवकूफ होते हैं। परन्तु कोई बात नहीं। अतः अपने बच्चे की तरह से उसकी देखभाल करें और उसके प्रति अत्यन्त मधुर एवं अच्छी बनी रहें। आपके परिवार का कोई भी सदस्य आपके पति से महत्वपूर्ण नहीं है। यह बात अब आपके लिए बहुत आवश्यक है कि आपका पति ही आपके लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। विवाह की यही सहज शैली है। सहज से बाहर आप विवाह कर सकती हैं, दस विवाह कर सकती हैं, ये अलग बात है। परन्तु सहज में ऐसा नहीं है। परन्तु एक बार यदि आपका तलाक हो जाता हैं तो हम पुनः आपका विवाह नहीं करते, ऐसा करना हमने छोड़ दिया है। ऐसा करके हम देख चुके हैं क्योंकि इस प्रकार पतियों को त्यागने की आदत बन जाती है, एक

बार जब आपका विवाह हो जाता है। तो आपको विवाहित ही रहना है। यदि आपको तलाक लेना है तो ये बात जान लें कि हमें आपसे कुछ नहीं लेना–देना। सहजयोग से आपको बाहर फेंक दिया जाता है। हम चाहते हैं कि बहुत अच्छे विवाह हों, बहुत अच्छे बच्चे बनें और बहुत अच्छी पीढ़ी आए। आप यदि अत्यन्त अच्छे, विवेकशील, बुद्धिमान एवं सुहृद माताएं हैं तो बच्चों का भविष्य बहुत अच्छा हो जाएगा।

मैं आपको काफी बता चुकी हूँ। मुझे आशा है कि आप इस बात को समझ गई हैं कि आप सहजयोग में विवाह कर रहीं हैं और आपने सहजयोग की गरिमा को बनाए रखना है। क्या आप सब इस बात का वचन देती हैं?

परमात्मा आपको धन्य करें।

नवरात्रि पूजा

लॉस एंजलिस, 27-10-2002

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम देवी की पूजा करेंगे। सर्वप्रथम उनसे बायीं ओर का कार्यक्रम नियत होता है परन्तु बाद में सहस्रार पर वे कार्य करती हैं। वे आदिशक्ति हैं। बायीं तरफ जो भी कार्य वे करती हैं, इसके विषय में लिखा हुआ है। क्योंकि वे 'समृद्धि' हैं और 'विवेक' हैं और वे सुरक्षा भी प्रदान करती हैं। गणों पर जब वे अपनी शक्ति उपयोग करती हैं तब यह बात प्रकट होती है।

जैसा कि हम जानते हैं गण ही आपके अन्दर के सभी प्रकार के सुधारों के लिए जिम्मेदार हैं। गण बायीं ओर से कार्य करते है। हम जानते है कि कैंसर रोग बायीं ओर की समस्या है। देवी की शक्तियों से पूर्णतः एकरूप यह गण भी बायीं तरफ ही होते हैं। देवी को उन्हें बताना नहीं पड़ता, उनका पथ प्रदर्शन नहीं करना पड़ता। उनकी संरचना ही इस प्रकार से होती है। यही गण, मैं कहना चाहूँगी, निशाना

लगाते हैं, रोग पर निशाना लगा कर इसे ठीक करते हैं। गणों के माध्यम से हमने बहुत से कैंसर रोगी तथा बायीं ओर के (मनोरोगी) ठीक किए हैं। परन्तु गण किसी अन्य की बात नहीं सुनते। गणपति उनके सेनापति हैं या मैं ये कहूंगी कि वे उनके नियंत्रक हैं।

अतः यदि आपके गणपति ठीक हैं तो समस्याएं बहुत कम होती हैं। परन्तु यदि गणपति ठीक नहीं हैं तो सभी प्रकार की समस्याएं आ कर कष्ट देंगी। ये एक ऐसी चीज़ है जिसकी ओर मैं बहुत ध्यान देती हूँ कि हमें अपने अन्दर श्री गणेश को अवश्य ठीक रखना चाहिए। उस दिन मुझे पत्रों से भरा हुआ एक बहुत बड़ा लिफाफा मिला। इनमें लिखा था कि श्री माता जी गणों को नियंत्रित करना बहुत कठिन कार्य है। गणपति को सभांलना भी अपने आप में बहुत कठिन कार्य है तो हम क्या करें? हम हतप्रभ अवस्था में होते हैं। ऐसी स्थिति में जब आपको कोई मार्ग नज़र नहीं आता और गणपति के प्रभाव पर जब आप काबू नहीं कर पाते तो आपको चाहिए कि आप ध्यान में चले जाएं। गणों को काबू करने का एकमात्र रास्ता ध्यान धारणा है।

बच्चों का पालन पोषण तथा वातावरण सर्वप्रथम है। ये दोनों कार्य बहुत महत्वपूर्ण हैं। इनसे आप गणों के साथ ठीक से चल सकेंगे। लेकिन समस्या यह है कि मानव व्यर्थ की चीज़ों में खो जाता है और अपने गणेश तत्व की देखभाल नहीं करता। अतः देवी की पूजा करते हुए आप श्री गणेश की भी पूजा कर रहे हैं क्योंकि श्री गणेश उन्हीं की शक्ति हैं। आपकी सुरक्षा ही श्रीमाताजी की शक्तियों का मुख्य कार्य है सभी प्रकार की बाधाओं से सुरक्षा, बायीं ओर की सभी प्रकार की सुरक्षा। इनका वर्णन–देवी महात्म्यं में किया गया है और आपने इन्हें पढ़ा होगा। जो भी सुरक्षा वो आपको प्रदान करती हैं उनका वर्णन किया गया है। उनकी सुरक्षा शक्ति इतनी महान है। यह सुरक्षा शक्ति आपको इस प्रकार की समझ प्रदान करती है कि देवी कितनी करुणामय हैं और कितनी सुरक्षादायिनी। हर समय वे आपका पथ प्रदर्शन करती हैं। ताकि बायीं ओर की समस्याओं से आप सुरक्षित रहें। अपने गणों के माध्यम से वे आपकी बायीं ओर की देखभाल करती हैं। परन्तु दाईं ओर को भी–जो लोग आक्रामक हैं – देवी अपनी शक्तियों से उन्हें भी ठीक करती हैं। ताकि आप सामान्य अवस्था में वापस आ जाएं, विनम्र हो जाएं और यह समझ सकें कि आप देवी (श्रीमाताजी) के बालक हैं और आपको बाल सुलभ आचरण करना है।

परन्तु यदि आप अति में जाएंगे तो दाईं ओर की सभी प्रकार की जटिलताएं वैसे ही खड़ी हो जाएंगी जैसे दाईं ओर की होती हैं। आजकल दाईं ओर की

समस्याएं बहुत ही आम बात है और मैंने देखा है कि लोग इन पर काबू नहीं पा सकते। इनके कारण बाद में अल्जाइमर **(Alzhiemer)** जैसे रोग हो जाते हैं।

इसकी शुरुआत जिग़र से होती है। जिग़र मुख्य बिन्दु है क्योंकि हम जिग़र के जाल में फँस जाते हैं। आप यदि बहुत अधिक सोचते हैं, बहुत अधिक भविष्यवादी हैं, आप यदि आक्रामक हैं तो जिग़र बिगड़ जाता है क्योंकि इन सभी कार्यों के लिए आपको ज़िगर की शक्ति का उपयोग करना पड़ता है। ज़िगर की शक्ति समाप्त होने पर आप ज़िगर-शक्ति विहीन हो जाते हैं और आपमें ऐसे भयानक रोग और कष्ट पनप उठते हैं जिन पर आप काबू नहीं पा सकते। ऐसा करना बहुत ही कठिन होता है।

निःसन्देह सहजयोग ध्यान धारणा द्वारा बहुत से लोगों का ज़िगर ठीक हो गया है। ठीक होकर उनके ज़िगर अब बहुत ही अच्छा कार्य कर रहे हैं। परन्तु व्यक्ति को विनम्र होकर अपने ज़िगर को ठीक रखने का प्रयत्न करना चाहिए। तो ये गण आपके शरीर के अन्दर बाईं ओर को सुरक्षा की संरचना करते हैं जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप दाईं ओर को भी सुरक्षा मिलती है। परन्तु देवी का आशीर्वाद महानतम चीज़ है, जिस प्रकार से वे आपकी देखभाल करती हैं, जिस प्रकार वे आपको प्रेम करती हैं, आपकी चिन्ता करती हैं। इन सब आशीर्वादों को अधिकार नहीं मान लिया जाना चाहिए।

ध्यान करना आवश्यक है अवश्य ध्यान करें। ध्यान बहुत महत्वपूर्ण है, ध्यान धारणा के बिना स्वयं को ठीक रख पाने का प्रश्न ही नहीं होता, इसका प्रश्न ही नहीं है। ध्यान धारणा बहुत महत्वपूर्ण है, ध्यान किया ही जाना चाहिए क्योंकि इसी के माध्यम से ही आप चैतन्य लहरियों के समीप पहुँचते हैं या मैं कहूंगी, देवी के स्वभाव के समीप पहुँचते हैं। पशु भी माँ के प्रति बहुत संवेदनशील हैं, चैतन्य लहरियों के प्रति अत्यन्त संवेदनशील हैं। पशु तो चैतन्य लहरियों के प्रति संवेदनशील हैं परन्तु मानव की अपनी ही सूझ-बूझ है, अपनी ही स्वतंत्रता है, अपनी ही बुद्धि है और वे इसी के जाल में फंस जाते हैं और ऐसे कार्य करते हैं जो उन्हें नहीं करने चाहिएं।

अतः अमेरिका जैसे देश के लिए जिस चीज़ की आवश्यकता है, वह हैं, श्रद्धा और भक्ति। वहां पर इन दोनों चीज़ों का अभाव है। भारतीय सहजयोग को अपनाते हैं और इसकी गहनता में उतर जाते हैं क्योंकि वो जानते हैं कि भक्ति क्या है, श्रद्धा क्या है। उनके अहं आदि दुर्गुण समाप्त हो जाते हैं। परन्तु इस भक्ति का आनन्द लिया जाना चाहिए। मैं नहीं जानती कि किस प्रकार व्यक्ति के अन्दर भक्ति का सृजन किया जाए। ये बात मैं नहीं कह सकती। परन्तु भक्ति में डूबे हुए लोग मैंने देखे हैं। भक्ति

यद्यपि भावनापक्ष है फिर भी उन लोगों ने महान बुलंदियाँ प्राप्त कर ली हैं। भक्ति भाव में बहकर भी मैं नहीं जानती कि किस प्रकार भक्ति और श्रद्धा ने उनकी सहायता की। इस मामले में भारतीय सर्वोत्तम हैं क्योंकि उनमें भक्ति और श्रद्धा की शक्ति है। ये पागलपन नहीं है, यहाँ के लोगों की तरह से पागलपन नहीं है। यहाँ मैंने लोगों को देखा है कि किसी न किसी धर्मान्धता में फंसकर वे पगला जाते हैं। ये पागलपन नहीं है। भक्ति तो प्रेम है और प्रेम सूझ–बूझ प्रदान करता है और समझता है कि भक्ति और श्रद्धा क्या है। अपने अन्दर भक्ति और श्रद्धा विकसित किए बिना आप उन्नत नहीं हो सकते। अपनी समस्याओं से छुटकारा नहीं पा सकते। अपने व्यक्तित्व से ऊपर नहीं उठ सकते क्योंकि भक्ति को किसी पर थोपा नहीं जा सकता। किसी को पागल बनाकर आप कह सकते हैं कि वो भक्ति कर सकता है। आपको अपने सारे गुण बनाए रखने होंगे, आपको विवेकशील होना होगा, आपमें सूझ–बूझ होनी चाहिए, सभी गुण आपमें होने चाहिएं परन्तु भक्ति का आनन्द भी आपमें होना चाहिए। भक्ति का ये आनन्द जब आपमें प्रवाहित होने लगता है तो देवी स्वयं आपके रोम–रोम में प्रवेश कर जाती हैं। भारत में मैंने बहुत से भक्तों और सन्तों को देखा है, उन सन्तों को जिन्होनें बहुत बुलंदिया प्राप्त की हैं। वो लोग बहुत गहन उतर गए। आप यदि उन्हें पढ़ें, उन्हें समझें तो आप हैरान होंगे कि किस प्रकार बिना किसी सहायता के, बिना किसी पथ प्रदर्शन के इतनी गहनता में जाकर देवी की पूजा कर पाऐ।

पूजा केवल पढ़ना या मंत्रोच्चारण मात्र नहीं है। यह तो आपके चित्त की गहनता है। मेरे विचार से यह आत्मा है। आपके अन्दर यदि आत्मा जागृत हो जाए तो भक्ति पनपती है और सभी मूर्खतापूर्ण विचारों को, उन सभी चीज़ों को जो आपके मस्तिष्क में घुस गई है, निकाल फेंकती है। केवल भक्ति विकसित करें। देवी के ये सभी गुण जो बताए गए हैं, ये भावना पक्ष के हैं। ये सब स्मृति में हैं। 'स्मृति रूपेण संस्थिता'। जिन अन्य चीज़ों का वर्णन किया गया है वे मस्तिष्क की हैं। जब यहां भक्ति पनपती है तो इन सभी चीज़ों के प्रभाव को समाप्त करती है। मस्तिष्क की सभी समस्याएं निष्प्रभावित हो जाती है और आप विवेकशील व्यक्ति बन जाते हैं।

अतः विवेक देवी का सबसे बड़ा आशीर्वाद है। इसे आप 'चेतना' भी कह सकते हैं, कुछ भी कह सकते हैं। ये एक ऐसा विवेक है जिसे प्राप्त करके आप पूर्णतः दिव्य व्यक्तित्व बन जाते हैं। भक्ति के माध्यम से आपने यह विवेक प्राप्त करना है। परन्तु हमारे यहां भिन्न प्रकार के लोग हैं। कुछ तो अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति और समर्पण से परिपूर्ण हैं परन्तु वे भटके हुए हैं, यह नहीं जानते कि कहां जाएं

और किस की पूजा करें।

सहजयोग वास्तवीकरण है, साक्षात्कार है। ये वास्तवीकरण है जिससे आप जान जाते हैं कि किसकी पूजा करनी है, किसके प्रति समर्पित होना है। ये अन्धविश्वास नहीं है। विवेकहीन भक्ति आपको सभी प्रकार की मूर्खताओं में फंसा सकती है। इसी के कारण बहुत से पथ तथा अन्य कुरीतियां पनपी हैं। अन्ध भक्ति न तो कुछ देखती है, न जानती है, न समझती है। विवेक द्वारा, अपनी पूर्ण चेतना द्वारा यह समझना चाहिए कि भक्ति का जीवन क्या है। कुण्डलिनी जागृति प्राप्त करके हम भक्ति को समझने की, भक्ति की शक्ति जानने की महान बुलंदी पर पहुँच गए हैं। भक्ति की सबसे बड़ी शक्ति आपकी सुरक्षा है। यह आपकी रक्षा करती है। जो लोग किसी कष्ट से, किसी समस्या से पीड़ित हैं वो एक–दम से पीड़ा मुक्त हो जाते हैं क्योंकि आपके अन्दर की भक्ति आपको उचित सूझ–बूझ, स्वयं को, अपने वातावरण को और पूरे ब्रह्माण्ड को समझने की शक्ति प्रदान करती है। लोग इस प्रकार से क्यों आचरण करते है, वे ऐसे क्यों है, इन सभी प्रश्नों के उत्तर भक्ति के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं। यह चेतना विहीन नहीं होनी चाहिए। भक्ति विवेक से परिपूर्ण होनी चाहिए और ऐसी भक्ति, मेरे विचार से सहजयोग के माध्यम से ही संभव है। अन्यथा जिस प्रकार पागलों की तरह से लोग भक्ति करते हैं यह भक्ति नहीं हो सकती। आपको पागल नहीं बनना। विवेकशील पुरुष बनें। जिस प्रकार से बीते युगों में बहुत से विवेकशील पुरुष हुए जिस प्रकार से उन्होनें ज्ञान की चर्चा की, वह आश्चर्यचकित कर देने वाला है। जिस प्रकार उन्होंने मानवीय चेतना और आपके उत्थान के विषय में बताया वह प्रशंसनीय था। कई बार मुझे लगता है कि उन्होनें मेरे लिए क्षेत्र तैयार कर दिया – एक ऐसा क्षेत्र जिसके विषय में मुझे बताना है। भारत में विशेषरूप से, मैं नहीं जानती, हम इतने श्रद्धामय क्यों हैं?

इसी प्रकार से सर्वत्र ऐसा ही घटित होना चाहिए। भारत में भी पागल लोग हैं, वहां पर भिन्न पंथ हैं। सभी प्रकार की चीज़ें हैं इसमें कोई संदेह नहीं। परन्तु वास्तव में वहां ऐसे सन्त भी हैं जिन्होंने भलीभांति हमारा पथ प्रदर्शन किया। परन्तु इस सबके बावजूद भी वहां पर लोग भटक रहे हैं। गलत–गलत कार्य कर रहे हैं। गलत तरह की पूजा कर रहे हैं। हाँ, यह बात सत्य है, इसमें कोई संदेह नहीं है। परन्तु मैं कहूँगी कि यह भी एक विचित्र प्रकार का पागलपन है जिसमें विवेक का पूर्ण अभाव है। पागल और सयाने व्यक्ति में अन्तर केवल इतना होता है कि पागल में विवेक नहीं होता। जिनमें यह तथाकथित विवेक होता है वो कहते हैं कि हम बहुत विवेकशील हैं।' ऐसे लोग भी बुरी तरह से गलतफहमी में हैं

क्योंकि जिस प्रकार से वे व्यवहार करते हैं, जिस प्रकार से वे गलतियां करते हैं, जैसा उनका चित्त है, सभी कुछ अत्यन्त आश्चर्यचकित कर देने वाला है। सर्वप्रथम आत्मनिरीक्षण द्वारा देखना है कि 'क्या मैं विवेकशील हूँ? क्या मैं विवेकशील हूँ? मैं विवेकपूर्ण कार्य कर रहा हूँ या नहीं?'

सहजयोगियों के विषय में मुझे बहुत सी शिकायतें आती हैं। किस प्रकार वो ऐसे कार्य कर रहे हैं? मैं कहूँगी कि वो अभी तक भक्ति और श्रद्धा की स्थिति में नहीं पहुँचे हैं। मैं ये भी कहूँगी कि पाश्चात्य जीवन में भी इन दोनों गुणों का अभाव है। हमें वापस लौटना चाहिए, विकसित होना चाहिए, उन्नत होना चाहिए। परन्तु अब तो पूर्वी देशों के जीवन में भी यह दोनों चीज़ें समाप्त होती जा रही हैं। जीवन की पाश्चात्य शैली अब उनका आदर्श बन गई है। एक बार जब आप पाश्चात्य जीवन को अपना लेते हैं तो श्रद्धा और भक्ति पीछे छूट जाती है क्योंकि वहां पर हर चीज़ को विचारों के तराजू में तोला जाता है कि जीवन में क्या लाभदायक है और क्या सहायक। उनके दृष्टिकोण से श्रद्धा और भक्ति का कोई लाभ नहीं। इनसे कोई हित नहीं होता। अधिकतर लोग आजकल ऐसा ही सोचते हैं। आप कुछ थोड़े से ही लोग हैं जिन्होंने समझा है कि भक्ति क्या है, श्रद्धा क्या है।

देवी आपको श्रद्धा एवम् भक्ति प्रदान करती है और इसी के कारण आप इतने सारे चमत्कार घटित होते देखते हैं। आप हैरान होते हैं कि ये सब किस तरह से घटित हो रहा है। 'इसकी तो हमने कभी आशा ही नहीं की थी, यह कैसे हो गया? किस प्रकार यह कार्यान्वित हुआ?' देवी आपमें त्रृटि सुधार भी करती है। आप यदि चेतन हैं तो आप देखते हैं कि वे आपको सुधारती हैं और बताती हैं कि इस मार्ग पर मत चलो।

वे बताती हैं कि आप अहं में फंस रहे हैं या भावनाओं में बह रहे हैं। सभी क्षेत्रों में वे आपको सुधारती हैं। हम बीमारियों तथा अन्य प्रकार की समस्याओं में फंस जाते हैं, इसका कारण यह है कि हममें भक्ति नहीं है। भक्ति में आपके पास 'माँ' कि शक्ति होती है। शक्ति का विवेक होता है। वे (देवी) आपकी देखभाल करती हैं। वे आपके लिए मार्ग खोजती हैं और आपकी सहायता करती हैं। अपने ही विचारों में यदि आप उलझे रहते हैं कि मैं ठीक हूँ, मैं ऐसा कर सकता हूँ, मैं वैसा कर सकता हूँ तो अन्ततः आपको महसूस होगा कि आप गलत हैं और आपके मस्तिष्क में आपके तथा परमात्मा के विषय में बहुत बड़ी गलतफहमी थी।

अतः समर्पण महत्वपूर्ण है। इस्लाम शब्द का अर्थ है समर्पण। परन्तु मोहम्मद साहब ने कहा था कि समर्पण से पूर्ण आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेना आवश्यक है। परन्तु आपने देखा है कि

आत्मसाक्षात्कार के बाद भी, स्थापित होने के बाद भी लोगों को स्थापित होने में समय लगता है। एक बार स्थापित होने के पश्चात् आप समझ जाते हैं कि आप देवी की सुरक्षा में हैं। इस बात को आप प्रतिदिन देखते हैं कि किस प्रकार आपकी सहायता की जाती है। बहुत से लोग ऐसे हैं जो सहजयोग में हैं, मेरा बहुत सम्मान करते हैं, फिर भी वे पूरी तरह से समर्पित नहीं हैं। तब उन्हें कष्ट होता है, कई प्रकार की समस्याएँ उन्हें होती हैं और वो पूछते हैं, 'श्रीमाता जी, मुझे ये समस्याएं क्यों हैं?' मैं उन्हें कुछ नहीं बताती क्योंकि मानव को आप कुछ बता नहीं सकते। वे अत्यन्त आक्रामक हैं। परन्तु वास्तविकता यही है कि आप परमात्मा से एक रूप नहीं है। यदि आप परमात्मा से एकरूप हों तो सदैव आप पर दैवी प्रेम और करुणा की वर्षा होती रहती है और आपके सभी काम अत्यन्त अच्छी तरह से और बिना किसी बाधा के सम्पन्न होते हैं। लोग चाहे इस बात को न समझें–सम्भवतः यही कारण है कि उन्होंने ईसामसीह को सूली पर चढ़ा दिया। सभी प्रकार के उल्टे सीधे कार्य उन्होंने किए। ठीक है। परन्तु अब आपको चाहिए कि देवी से सुरक्षा की याचना करें क्योंकि सभी प्रकार की समस्याओं, कष्टों तथा सभी प्रकार की संभव मूर्खताओं से आपकी सुरक्षा करना ही देवी का महानतम् गुण है।

बहुत सी चीज़ें घटित हो जाती हैं। मुझे बताया गया कि एक सहजयोगी अगुवा (Leader) की हत्या कर दी गई। मैंने कहा ऐसा संभव नहीं है, और उस व्यक्ति की हत्या नहीं हुई थी। यह बात संभव नहीं है, इस प्रकार से किसी युवा व्यक्ति (सहजयोगी) की हत्या होना संभव नहीं है।

निःसन्देह, वृद्ध सहजयोगियों की भी मृत्यु होती है। परन्तु यह कहना कि उसकी हत्या कर दी गई, ठीक नहीं है।

तो यह सुरक्षा है–न केवल शारीरिक, मानसिक एवम् भावनात्मक परन्तु आध्यात्मिक सुरक्षा भी–आध्यात्मिक सुरक्षा जिसमें आप कोई गलत कार्य ही नहीं करते। आप किसी की हत्या नहीं करते, किसी को कष्ट नहीं देते, किसी के प्रति कटु नहीं होते। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें आप सभी प्रवेश कर सकते हैं क्योंकि आप सहजयोगी हैं। यह स्थिति आप प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा करने की शक्ति आपमें है क्योंकि आपमें इतनी श्रद्धा है, सूझ–बूझ है जिसके कारण आप सुरक्षा, उत्थान एवम् विवेक की एक विशेष स्थिति में पहुँच गए है।

सर्वप्रथम अपने विवेक को जाँचें। विवेक को परखना आवश्यक है। 'मैं यदि इस कार्य को इस प्रकार से कर रहा हूँ तो क्या यह ठीक है? क्यों मैं ऐसा कर रहा हूँ? सर्वप्रथम अपने विवेक को परखें, ऐसा करने से आप जान जाएंगे कि बहुत से कार्य जो आप करते हैं वो गलत थे

और जिन्हें किया नहीं जाना चाहिए था। परन्तु सर्वप्रथम आपका विवेक उन्नत होना आवश्यक है। आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आपका विवेक कार्य करता है और आपकी मदद करता है।

मैंने कल का नाटक देखा। आपने भी इस लड़की को देखा होगा। वह अति संवेदनशील है और सदैव विवेकपूर्वक देखती है कि उचित क्या है। आप यदि यह बात नहीं जान सकते कि अच्छा क्या है, बुरा क्या है तो इसका अर्थ यह है कि आपमें विवेक का अभाव है। आप यदि यह नहीं समझते कि आपको क्या कहना चाहिए और क्या नहीं तो भी विवेक की कमी है। परन्तु आपमें यदि विवेक है तो एकदम से आप समझ जाएंगे कि गलत क्या है। इसके अतिरिक्त सभी प्रकार की समस्याओं से आप बचा लिए जाते हैं। यह बात सत्य है। मैंने ऐसे बहुत से लोगों को देखा है जिनकी रक्षा की गई, न केवल मृत्यु से परन्तु सभी प्रकार की भयानक विपत्तियों से भी। सभी प्रकार की विपत्तियों से। मैं हैरान थी कि किस प्रकार परमात्मा ने इन सहजयोगियों की सहायता की!

परमात्मा एक शक्ति है जो सर्वव्यापी है। परन्तु यह शक्ति केवल उन्हीं की सहायता करेगी जो सहजयोगी हैं, जो दिव्य हैं। ये उनकी सहायता नहीं करेंगी जो ऐसे हैं, कभी नहीं। 'इसके विपरीत यह ऐसे ढंग से दंडित भी कर सकती है जिसकी कभी आशा भी नहीं की जा सकती। अतः व्यक्ति को स्वयं को जाँचने में अत्यन्त सावधान हो जाना चाहिए। इसी क्रिया को मैं अन्तर्अवलोकन कहती हूँ। भिन्न लोगों से व्यवहार करते हुए क्या आप विवेकशील थे? आपकी शैली क्या थी? क्या इसमें धनलोलुपता है या प्रभुता लोलुपता? अन्तर्अवलोकन द्वारा आपको इन चीज़ों का पता लगाना है और तब हैरान होगें, अत्यन्त हैरान होगें कि परमात्मा के नाम पर भी आप गलत कार्य कर सकते हैं। परमात्मा के नाम पर आप बहुत से गलत कार्य करते चले गए और यही कारण है कि आज हमारे सम्मुख धर्म के नाम पर इतनी दुर्व्यवस्था है। धर्म में तथा धर्म के विषय में बताने वाले संतों में कोई कमी न थी। परन्तु जिस प्रकार से लोगों ने धर्म को समझा और इसका उपयोग किया वह गलत था क्योंकि उन लोगों में विवेक का अभाव था। विवेक एक ऐसा गुण है जो यह समझ लेना मात्र नहीं होता कि मैं विवेकशील हूँ। विवेक तो अपना प्रभाव दिखाता है, कार्यान्वित करता है और दर्शाता है कि ठीक क्या है और गलत क्या है।

विवेक उस व्यक्ति की निशानी है जो वास्तव में उच्चस्तर का आत्म साक्षात्कारी है। आपमें यदि विवेक नहीं है तो जो चाहे आप करते रहें और अपने कार्य से जितने चाहे संतुष्ट हो जाए परन्तु विवेक का अंश अत्यन्त-अत्यन्त

महत्वपूर्ण है। हमारे अन्दर यह अत्यन्त मार्गदर्शक गुण है, और जैसा आप जानते है, श्री गणेश विवेक प्रदायक है। इसलिए श्री गणेश की पूजा होनी आवश्यक है।

उचित प्रकार के पालन पोषण से श्री गणेश स्थापित होते हैं क्योंकि वे विवेक दाता होने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। विवेक अर्न्तजात है, इसका आंकलन आपको नहीं करना पड़ता। हमारे अन्दर यह अर्न्तजात है, और अन्य गुणों की तरह से उन्नत भी है। कुछ लोगों में विवेक उन्नत होने में समय लगता है। निःसन्देह इसमें समय लगता है, परन्तु एक बार जब यह उन्नत हो जाता है तो व्यक्ति अत्यन्त सहज एवम् पूर्णतः सत्य मार्गी बन जाता है, उसे इसका ज्ञान होता है और यही गुण व्यक्ति ने विकसित करना होता है कि 'मैं कहाँ तक विवेकशील हूँ?'

इस विश्व में लोग एक चीज का विरोध कर रहे हैं दूसरी चीज़ का विरोध कर रहे है, सभी प्रकार के उल्टे–सीधे कार्य कर रहे हैं। परन्तु आपमें यदि विवेक है तो इस प्रकार का कोई कार्य करने की आपको आवश्यकता नहीं है। स्वतः ही व्यक्ति समझ जाता है कि वह विवेकशील है। युग–युगान्तरों से विवेकशील पुरुष की प्रशंसा होती आई। ऐसे व्यक्ति को न तो अपनी धन सम्बन्धी अवस्था की और न ही कोई भावात्मक पक्ष की चिन्ता होती है – कुछ नहीं।

उसे केवल एक ही चीज़ की चिन्ता होती है–'क्या मैं विवेकशील हूँ?' परमात्मा के आशीष का यह प्रथम चिन्ह है। जिस पर परमात्मा की कृपा होती है वह व्यक्ति विवेकशील होता है, अत्यन्त विवेकशील और उसकी शांति से उसका विवेक झलकता है और परमेश्वरी शक्ति अपने माध्यम के रूप में उस व्यक्ति का उपयोग करती है और महान कार्य करती है। व्यक्ति स्वयं हैरान होगा है कि यह सब किस प्रकार घटित हुआ। महिला में भी यह गुण हो सकता है, पुरुष में भी हो सकता है, किसी में भी यह विवेक, यह गहनता, यह स्वभाव, उन्नत हो सकता है और यह अत्यन्त सुन्दर एवं अत्यन्त शक्ति–प्रदायक है।

ऐसा व्यक्ति किसी को श्राप नहीं देता, किसी को अभिशप्त करने का कष्ट नहीं करता फिर भी सभी कुछ कार्यान्वित होता है किसी से वह नाराज नहीं होता फिर भी सभी कार्य होते हैं। किसी पर भी वह नाराज नहीं होता, बिल्कुल भी नहीं। क्रोध तो आप ही को हानि पहुँचाता है, ऐसी हानि जिसकी आपने कभी आशा भी नहीं की होती। मानव रूप में विवेकशील बन जाने की शक्ति हममें निहित है। यह हमारे अन्दर निहित है।

मैंने देखा है कि पशु भी चैतन्य लहरियों के प्रति संवेदनशील होते हैं–अत्यन्त संवेदनशील। क्योंकि उनका विवेक अखण्ड होता है और उनमें कार्य

करता है, यद्यपि वे इसके प्रति चेतन नहीं होते। पशु और मानव में अन्तर यह होता है कि मानव अपने विवेक के प्रति चेतन होता है। केवल इतना ही अन्तर है। पशुओं में विवेक होता है परन्तु स्वचालित या ये कहें कि स्वाभाविक। परन्तु हमने अपने अन्दर इस विवेक को विकसित किया है, प्रयत्न से इसे प्राप्त किया है। किस माध्यम से? अपनी ध्यान धारणा के माध्यम से, सूझ–बूझ, भक्ति और श्रद्धा के माध्यम से।

अतः अपने अन्दर भक्ति के मूल्य को समझना अत्यन्त आवश्यक है। सतही तौर पर आप इसे नहीं छू सकते। जो लोग उथले हैं कभी इसे प्राप्त न कर सकेंगे। किसी भी व्यक्ति को आप विवेकशील पा सकते है चाहे वह आपका नौकर हो या बहन, चालक हो या कोई भी हो, और हैरान होते हैं कि किस प्रकार यह व्यक्ति इतना विवेकशील हो सकता है! हो सकता है अपने पूर्व जन्म में उसने अपने अन्दर यह विवेक विकसित किया हो या गहनता में जाकर इसे प्राप्त किया हो। यह अवस्था किसी व्यक्ति विशेष की नहीं है, यह अवस्था बहुत से लोगों को भी प्राप्त हो सकती है।

अतः सहजयोगी वही है जिसने विवेक प्राप्त कर लिया है। आप यह क्यों कर रहे है? ऐसा करने की क्या आवश्यकता है? उन्हें यह सब पूछने की कोई आवश्यकता नहीं। वो तो बस कोई गलत कार्य करते ही नहीं, गलत कार्य करते ही नहीं। सदैव वे उचित मार्ग पर होते हैं। मैं सोचती हूँ कि सहजयोगी का यही चिन्ह है और यह देवी का आशीर्वाद है। देवी की शक्ति यदि आपमें कार्य कर रही है तो इसे कार्यान्वित करने के लिए आपको विवेक प्राप्त हो जाएगा। आपने देखा होगा कि बहुत से लोग अमेरिका आ रहे थे और सभी प्रकार के कार्य कर रहे थे। अब वे सब गायब हो गए हैं। उन्हें किसी भी प्रकार का आश्रय नहीं मिलता। कहाँ चले गए है? वे सब समाप्त हो गये हैं क्योंकि वे तो धन तथा सत्ता लोलुप थे। मैं नहीं जानती कि उनकी क्या लालसा थी परन्तु वे सब असफल हो गए हैं। जो व्यक्ति अपने विवेक में स्थापित है वही सन्त है, उसी को सन्त कहा जाता है। परन्तु सभी सहजयोगी सन्त हो सकते हैं, विवेकशील हो सकते हैं। कोई भी सहजयोगी ऐसा हो सकता है। परन्तु यदि आपने अपना विवेक खो दिया तो आप बेकार हैं।

मुझे आपको यह बात बतानी है कि आपका विवेक ही आपकी रक्षा करेगा। अनजाने में आपकी सहायता करेगा। एक सहजयोगी एक बार कार में कहीं जा रहा था। जाते–जाते अचानक उसने दूसरी सड़क पर जाने का निर्णय कर लिया। हुआ ऐसा कि उस सड़क पर बहुत बड़ी दुर्घटना हो गई। यदि उसने सड़क न बदली होती तो वह भी उस दुर्घटना में

मारा जाता। इस प्रकार की बहुत सी घटनाएं लोगों ने मुझे सुनाई हैं कि, "श्री माता जी, किस प्रकार हमारी रक्षा की गई, किस प्रकार मौत के मुँह तक पहुँच कर हम जीवित हैं!" आप जिंदा इसलिए हैं क्योंकि आपकी परमात्मा को आवश्यकता है। परमात्मा नहीं चाहते कि आपकी मृत्यु हो जाए या आप समाप्त हो जाएं। उन्हें आपकी बहुत जरूरत है। उन्हें अपना कार्य करना है और आप ही उनके माध्यम हैं। आपमें यदि विवेक है तो परमेश्वरी कार्य को कार्यान्वित करने के लिए आप ही सर्वोत्तम माध्यम हैं।

देवी की शक्तियाँ सर्वप्रथम उनके शरीर में विद्यमान थीं। इन्हीं शक्तियों से उन्होनें असंख्य राक्षसों और असुरों का वध किया। वास्तव में देवी ने असुरों का वध किया परन्तु अब ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप सब लोग अब यहाँ हैं। आप सभी माध्यम हैं और अब यह इस प्रकार से कार्यान्वित होगा कि जो लोग आप को नष्ट करने का प्रयत्न कर रहे हैं, विवेकशील लोगों को समाप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं, वे सब समाप्त हो जाएगें। ऐसे लोग नष्ट हो जाएगें और यह कार्य कोई बाह्य माध्यम या व्यक्ति नहीं करेगा। अब विवेक इस कार्य को करेगा। विवेक सबसे बड़ा यन्त्र है जो इसे कार्यान्वित करेगा। क्या आप जानते है कि मैं जब पहली बार अमेरिका गई थी तो वहां इतनी भयानक चीज़ें देखीं कि लोग राक्षसी गुरुओं के पीछे दौड़ रहे हैं। इसके बाद मैं वहां कभी गई ही नहीं। नौ वर्षों बाद मैं वहां गई। जैसा मैंने बताया ये लोग पागल हैं। किस प्रकार ये भयानक गुरुओं का अनुसरण करते हैं और किस प्रकार ये इनका विश्वास करते हैं! उनमें समझने का विवेक नहीं है कि सत्य क्या है। यह बात अब कार्यान्वित हो सकती है। अब आप देख सकते हैं कि ऐसे (विवेकशील) लोग बहुत से हैं।

तो यह विवेक है और यदि अमेरिका को लोगों में यह विवेक आ जाएगा तो वह सहजयोग में आएंगे। केवल आएंगे ही नहीं इसमें उन्नत भी होगें। परन्तु यह देखने का विवेक आवश्यक है कि, "हम क्या करने वाले है? इससे हमें क्या प्राप्त होगा? हमारा लक्ष्य क्या है?" यह सभी चीज़ें उनके सम्मुख आनी चाहिएं, परन्तु प्रायः ऐसा नहीं होता। आप अवश्य उनसे बातचीत करें और उन्हें बताएं कि आपके अन्दर आत्मा विद्यमान है। आपको आत्मा बनना है। सभी अवतरणों ने यही बात कही है। तो क्यों न यही किया जाए, क्यों न आत्मा बन जाया जाए।

तब वे स्वयं इस बात को महसूस करेंगे कि 'हाँ, यह सच है।' कहा गया है कि आत्मा बनो। वो चर्च जाते हैं, मंदिर जाते हैं, यहां जाते हैं, वहां जाते हैं लेकिन यह नहीं समझते कि वे कर क्या रहे हैं, उन्हें किसी प्रकार की सुरक्षा की आवश्यकता होती है उसे प्राप्त करने के

लिए वे जाते हैं। परन्तु यह सुरक्षा तो उन्हें उनकी आध्यात्मिक स्थिति से प्राप्त होती है। जहां तक आत्मा का संबंध है आप की स्थिति क्या है (आप कहां खड़े हैं) जिन्होंने आत्मा का आनन्द लिया है वो कभी भी धर्म–पथ से डांवा डोल नहीं होते। परन्तु जिन्होनें यह आनन्द नहीं लिया वो चाहे अपने आप को सहजयोगी कहते रहें, कुछ भी कहते रहें, परन्तु वे गलत हो सकते हैं। आप यदि वास्तव में सहजयोगी हैं तो सर्वप्रथम आपको अपने विषय में जानना है। आप यदि इस शक्ति के माध्यम बनना चाहते हैं तो आपको भक्ति एवं श्रद्धा से परिपूर्ण होना होगा। यह भक्ति और श्रद्धा अत्यन्त आनन्ददायनी है, इस बात को मैं जानती हूँ। यह कभी आपको थकाती नहीं, कभी आपको कष्ट नहीं देती। यह अत्यन्त पोषण प्रदायनी एवं सुन्दर है। परन्तु इसका उचित स्थान पर होना, इसका उचित लक्ष्य एवं उचित सूझ–बूझ होना आवश्यक है। ऐसा करने के लिए आपके पास विवेक का होना जरूरी है। अतः यह देखने का प्रयत्न करें कि आपमें अपेक्षित विवेक है या नहीं। आप विवेकशील हैं या नहीं? हर व्यक्ति के लिए ये जान पाना कठिन होता है कि वह गलत है या ठीक क्योंकि विवेक का प्रभाव तो चहुँ ओर दिखाई देता है

अतः देवी के प्रति श्रद्धा और भक्ति निश्चित रूप से आपको विवेक प्रदान करती है। भारत में ऐसे बहुत से लोग हुए जिन्होनें बहुत भक्ति की और उनमें तथाकथित श्रद्धा भी बहुत थी। परन्तु वे विवेकशील नहीं थे, विवेक की वो बातें तो करते थे, सभी प्रकार की बातें करते थे परन्तु वास्तव में विवेकशील न थे। अतः विवेक तो एक अत्यन्त अन्तर्जात–अत्यन्त अन्तर्जात गुण है, यह सतही (दिखावा मात्र) ही नहीं है। इससे प्रकट होता है कि शक्ति की तरह से–यह सूझ–बूझ की शक्ति है जिसे देवी की शक्ति बल प्रदान करती है। अतः वह विवेक की दाता हैं। देवी का यह सबसे बड़ा गुण है कि वे विवेक की दाता हैं। उत्थान प्रक्रिया के एक भाग के रूप में ही विवेक आता है। अब तक का जितना भी विकास हुआ है वह देवी द्वारा ही लाया गया है ताकि आप आगे बढ़ सकें। वे आपको अत्यन्त विवेकशील व्यक्ति बना देंगी।

दूर दराज किसी गांव के कोने में बैठा हुआ साधु भी यदि सच्चा सन्त है तो उसका भी सम्मान होता है। परन्तु वह यदि मूर्ख है तो मैं कुछ नहीं कर सकती। वो आपको बेवकूफ बना सकता है, सभी प्रकार की चालाकियाँ आपसे कर सकता है परन्तु क्या वह आपका हित भी कर सकता है? नहीं, कुछ भी नहीं।

अतः जिस भी व्यक्ति को आप गुरु मानते हैं या जिसके पथ प्रदर्शन में आप

चलते हैं उसमें भक्ति होनी आवश्यक है, देवी की भक्ति। यह बात समझी जानी बहुत आवश्यक है। आधुनिक चीज़ें इस सीमा तक पहुँच गई हैं कि उनमें देवी के प्रति बिल्कुल भी सम्मान नहीं है–बिल्कुल भी नहीं। लोग देवी की बात तक नहीं करते, केवल वो बातें करते हैं जिनकी व्याख्या हो सकती है, जिन्हें समझा जा सकता है। ईसा मसीह की बात करते हुए भी वो देवी की बात नहीं करते! क्रूस पर चढ़े हुए भी ईसा मसीह ने कहा था 'सावधान–'माँ' (आदिशक्ति) आने वाली हैं।' ये कहने की उन्हें क्या आवश्यकता थी? क्योंकि वो नहीं चाहते थे कि उनकी माँ कष्ट में फँसे। परन्तु उन्होनें कहा, 'सावधान–माँ आने वाली हैं' **(Behold The Mother)** इसका अर्थ ये हुआ कि माँ जो कि आने वाली हैं उनके लिए आप यहाँ हैं। सभी ने इसकी ओर इशारा किया है और ऐसा कहा है। परन्तु अब भी हम अपने अहं में, अपनी ही सूझ–बूझ में व्यस्त हैं और उन चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं। सर्वप्रथम आपको सच्ची चीज़ों का अनुसरण करना चाहिए, मिथ्या चीज़ों का नहीं। परन्तु इसके लिए आपको विवेक की आवश्यकता होगी। मेरे विचार से उसके लिए आपको बहुत अधिक विवेक चाहिए और चाहे आपके पास विवेक पहले आ जाए या माँ का आशीर्वाद, आप इन दोनों के मध्य में होते हैं।

अतः मुझे आपको एक बात बतानी है कि सहजयोग प्रचार आरम्भ करने से पहले कृपया स्वयं को जांच लें, देखें कि क्या आपमें विवेक है? यह भी देखें कि क्या आपको माँ (श्रीमाताजी) का आशीर्वाद प्राप्त है? कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि केवल विवेकशील व्यक्ति ही ये जान सकते हैं कि उन्हें माँ का आशीर्वाद प्राप्त है या नहीं, इस बात को समझने के लिए हमारे पास बहुत से मार्ग हैं। सर्वप्रथम चीज़ है ध्यान–धारणा और श्रीमाताजी के फोटोग्राफ के सम्मुख बैठकर अपनी चैतन्य लहरियों को महसूस करते हुए निष्पक्ष रूप से अपना सामना करना। क्या आप आत्मसाक्षात्कारी हैं? क्या आप वास्तव में अच्छे आत्म–साक्षात्कारी हैं? क्या आप वास्तव में अच्छे आत्म–साक्षात्कारी है या नहीं। आप गहन हैं या नहीं? क्या आपको चैतन्य लहरियाँ आ रही है या नहीं? यह सब यदि आप देख पाएंगे तो आप जान जाएंगे कि सभी महत्वकांक्षाओं से कहीं बड़ी उपलब्धि समर्पित एवं विवेकशील व्यक्ति बन जाना है। केवल यही उपलब्धि आपको आनन्द प्रदान करेगी, सभी सहजयोगियों को आनन्द प्रदान करेगी। इसके बिना तो आप भी अन्य भटकते हुए लोगों की तरह से एक सर्व–साधारण मानव हैं। अब यह सब घटित होने का समय आ गया है। मैं कहूँगी कि ये एक विशेष समय है यद्यपि मेरे लिए एक बहुत बड़ा संघर्ष है, इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु

कोई बात नहीं। मैं जानती हूँ कि मैंने स्वयं को ऐसी स्थितियों में डाल लिया है जहाँ चीज़ें इतनी साधारण या सुगम नहीं हैं। कोई बात नहीं, परन्तु मैं ये महसूस करती हूँ कि आप लोग मेरी सहायता कर सकते हैं। आपमें यदि विवेक हो तो आप मेरे कार्य में सहायक हो सकते हैं। विवेक स्वयं को परखने में है, कि आप कितने लोगों को प्रेम करते हैं, किस प्रकार उनसे प्रेम करते हैं, किस प्रकार उनसे बातचीत करते हैं, उनसे क्या आशा करते हैं। ये सब हो जाना चाहिए। स्वयं को जाँचें अन्तर्अवलोकन करें, अन्तर्अवलोकन द्वारा आप ये सब देख सकते हैं। अतः सहजयोगी के लिए आवश्यक है कि वह अन्तर्अवलोकन करे।

दूसरी बात ध्यान धारणा है तथा तीसरी चैतन्य लहरियाँ लेना। ये बहुत महत्वपूर्ण हैं। मैं देखती हूँ कि कुछ लोग कहते हैं, "श्रीमाताजी हम ऐसा नहीं करते, हम वैसा नहीं करते। परन्तु क्यों? आप ऐसा क्यों नहीं करते? 'हम सहज कार्य करते हैं। सहज कार्य क्या है? यदि आप इन मूल चीज़ों को ही नहीं करते तो किस प्रकार से आप सहजयोगी हैं? और फिर उन लोगों से भिन्न प्रकार की जटिलताएं खड़ी हो जाती हैं। वे भी कष्ट उठाते हैं। मेरे विचार से व्यक्ति के पास यह समझने का विवेक होना चाहिए कि सहजयोग क्या है? लोग ये नहीं समझते कि कभी–कभी तो वे ऐसे लोगों के समूह बनाते चले जाते हैं जिन्हें इस बात की बिल्कुल भी समझ नहीं होती कि सहजयोग क्या है।

सहजयोगी तो एक अत्यन्त गहन व्यक्तित्व का व्यक्ति होता है। ये कहना मात्र काफी नहीं कि 'मैं सहजयोगी हूँ' परन्तु एक अत्यन्त गहन व्यक्तित्व व्यक्ति और जिसके व्यक्तित्व की महनता अन्य लोग, उसके विवेक द्वारा समझें। आप कितना बोलते हैं, कितना चिल्लाते हैं, कितना भाषण देते हैं इसका कोई महत्व नहीं। आपकी आंतरिक शान्ति, स्थिरता और अन्य लोगों को प्रेम करने की क्षमता ही महत्वपूर्ण है। केवल इन्हीं से ही लोग निर्णय कर पाते हैं कि वास्तव में आपको श्रीमाताजी का आशीर्वाद प्राप्त है या नहीं। तो यह चीज़ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अमरीका में मैं इस देश की समस्याओं से रक्षा करने के लिए आई हूँ क्योंकि ये देश भयानक समस्याओं से घिर गया है और ऐसा होना ही था क्योंकि यह बात समझने के लिए इनकी आँखें बन्द थीं कि वहाँ क्या गलत हो रहा है। यही अन्धता उन्हें उस बिन्दु तक ले आई है जहाँ वे अपने विनाशकारी अहं को देखने लगे हैं। धन लोलुपता आदि ने ये दर्शाया है कि वो इतने मूर्ख थे कि समझ बैठे कि वे अत्यन्त वैभवशाली हैं और अपने धन से तथा अन्य देशों तथा अन्य लोगों पर प्रभुत्व जमाकर कुछ भी कर सकते हैं। पहले स्वयं पर नियंत्रण करें। सर्वप्रथम स्वयं

को पहचानें। अन्य लोगों पर नियंत्रण करने का क्या अर्थ है। जो लोग स्वयं पर नियंत्रण करना नहीं जानते वो सदैव दुखी होते हैं, कष्टों से घिरे रहते हैं क्योंकि यह तो अनियंत्रित होने की प्रतिक्रिया है। दूसरों पर यदि आप नियंत्रण करने का प्रयत्न करते हैं तो इसकी प्रतिक्रिया होती है इसके लिए पूर्णतः अन्तर्अवलोकन करना होगा। इसीलिए मैं बार–बार कहती रहती हूँ कि अन्तर्अवलोकन करें। निःसन्देह मैं ये भी कहूँगी कि अब बहुत अच्छे सहजयोगी उभर कर आए हैं, उन्होनें सहजयोग को कार्यान्वित किया है और वे बहुत अच्छे सहज एवं विवेकशील व्यक्ति हैं। मेरे लिए यह अत्यन्त आशावर्धक हैं। मैंने कभी आशा नहीं की थी कि मैं इतनी अच्छी तरह से कार्यान्वित कर पाऊँगी, परन्तु ये कार्यान्वित हो गया है। सदैव आपको ये बात ध्यान रखनी है कि आपके अन्दर वो शक्ति है, आप उस शक्ति का उपयोग करें और मूर्खतापूर्ण विचारों के शिकार न बनें

आप सबका अत्यन्त धन्यवाद।

दिवाली पूजा

लॉस एंजलिस, 03.11.2002

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

दिवाली के पर्व पर आप सब को मेरी मंगलकामनाएं।

आप सब लोगों की यहां उपस्थिति ही मेरे लिए अत्यन्त आनन्ददायी है। आपका सहजयोग अपना लेना मेरे लिए अत्यन्त सुन्दर अनुभव है। यह आपका अपना है। आत्मा आपकी अपनी है। परन्तु आत्मा को अपना लेना कठिन है। मेरे विचार में योग की आपकी इच्छाएं पूर्ण हो रहीं है और इसी कारण से आपको आत्म–साक्षात्कार प्राप्त हुआ है।

जैसा आप भली–भांति जानते हैं, आत्म–साक्षात्कार किसी पर लादा नहीं जा सकता। केवल आपकी इच्छा तथा समर्पण से ही यह कार्यान्वित होता है। इसके विषय में बातचीत करने का या किसी को इसका कायल करने का कोई लाभ नहीं। केवल आपकी इच्छा ही कार्यान्वित होती है, यह बात इतनी साधारण है। आपके

हृदय के अन्दर की इच्छा शक्ति इसे कार्यान्वित करती है। विश्व भर के बहुत से लोग जिन्हें आत्म-साक्षात्कार प्राप्त है वो यहां उपस्थित नहीं हैं, वो भी मुझे याद हैं, आप सब भी उन्हें भुलाएं नहीं। उन सभी साक्षात्कारी लोगों के विषय में सोचने का आज बहुत अच्छा दिन है। यही सच्ची दिवाली है-मानव को प्रबुद्ध बनाना (आत्म-साक्षात्कार देना)। यह किसी मोमबत्ती या दीपक का ज्योतित करना नहीं है मानव को ज्योतित करना है

वे यदि ज्योतित हो जाएं तो कोई भी समस्या बाकी न रह जाएगी। जो लोग आत्म-साक्षात्कारी नहीं होते उनसे समस्याएं आती हैं क्योंकि वो अंधकार में फंसे होते हैं, वो अंधेरे में टटोल रहे होते हैं और उनमें से कुछ को यह भी ज्ञान नहीं होता कि वे वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं।

एक बार जब आप सहजयोग में आते हैं तो ये दखने लगते हैं। आरंभ में उसके प्रकाश में आप देखने लगते हैं कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है और फिर उन फूलों सम आप खिलने लगते हैं जो हर समय प्रसन्न रह कर आपको आनन्द प्रदान करते हैं। इसी प्रकार जब आप इस प्रकाश से ज्योतिर्मय हो जाते हैं तो आपको भटकना नहीं पड़ता सभी कुछ आपके अन्दर विद्यमान है, ज्योति को प्रज्जवलित रखें।

एक अन्य कार्य जो आप कर सकते हैं वो है अपने प्रकाश से अन्य लोगों को ज्योतिर्मय करना। जिस प्रकार हमने यहां किया, हमने एक दीपक जलाया और उससे बाकी के सभी दीपक जला दिए।

आप सभी यह कार्य कर सकते हैं क्योंकि आप सब में वह प्रकाश है। उस प्रकाश से आप अन्य लोगों में ज्योति प्रज्जवलित कर सकते हैं जिससे वो भी अपनी आत्मा के आनन्द को अनुभव कर सकें। अब यही चीज़ देखनी है। आपने इतने सारे दीपक जलाए हैं। इसी प्रकार से आप भी पूरे विश्व के लिए दीपक सम हैं। आपका अपना ज्योतिर्मय होना काफ़ी नहीं है, आपने अन्य लोगों को भी प्रकाश देना हैं। इन्हीं दीपकों की तरह से आपने अन्य लोगों को भी प्रज्जवलित करना है। महसूस होता है कि आपने क्या प्राप्त कर लिया है और तब आप अपना सम्मान करने लगते हैं और इस प्रकार आचरण करते हैं जो सन्तों और पैगम्बरों को शोभा देता है।

अपने अन्तस में वह आनन्ददायी, अत्यन्त सुन्दर स्वभाव आप विकसित कर लेते हैं। अपने विषय में आप कोई झूठी धारणाएं लोगों को नहीं देते क्योंकि आपके अन्दर तो सत्य का स्थान है। अपने विषय में कोई भी असत्य बात कहने की आवश्यकता नहीं। लोग महसूस करेंगे कि आप आत्म-साक्षात्कारी व्यक्ति हैं। आपकी सूक्ष्म प्रकृति एवम् वास्तविकता

को वो महसूस करेंगे। चाहे आप भारत से हों, इंग्लैंड से हों या अमेरिका से, आप सब में प्रेम एवं ज्ञान का वह सागर विद्यमान है। विश्वास करें कि वह है। सर्वप्रथम अपने प्रेम सागर का आप आनन्द लें। पहले आप अपने अन्दर छुपे इस प्रेम का आनन्द लें और तब आप दूसरों के प्रेम का भी आनन्द लें सकेंगे। मुझे आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि आप परस्पर प्रेम करें, आदि, आदि। स्वतः ही आप एक दूसरे को प्रेम करते हैं, एक दूसरे को समझते हैं और परस्पर प्रकाश फैलाते हैं।

कभी–कभी आप अपने देश के, शहर के या गांव के अन्य व्यक्तियों से निराश हो जाते हैं। क्योंकि उन्होंने अभी तक आत्म–साक्षात्कार नहीं लिया। परन्तु सर्वोत्तम बात तो इसे कार्यान्वित करना है। आपको यह कार्यान्वित करना होगा। सर्वप्रथम केवल एक वृद्ध महिला ने मुझसे आत्म–साक्षात्कार लिया और अब आप सब यहाँ पर हैं। इसी प्रकार से आप भी आत्म–साक्षात्कार के कार्य को कर सकते हैं। इसके लिए किसी प्रकार के हिसाब–किताब लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपको किसी प्रकार की तैयारी की आवश्यकता नहीं है। यह शक्ति तो यहां है और यह कार्य करती है। प्रकाश के लिए आप क्या करते हैं? आप केवल देखते हैं। दीपक को प्रज्जवलित करें और प्रकाश हो जाता है। इसी प्रकार से अपने आत्म–साक्षात्कार से भी आप विश्व भर के हजारों लोगों को प्रकाशवान कर सकते हैं। आप जानते हैं कि अभी तो आपने बहुत से देशों में प्रवेश करना है। हम इस कार्य को करेंगे, उन देशों का पता लगाएं जहाँ अभी हमनें जाना है और जहाँ हमने कार्य करना है।

सर्वप्रथम, आपमें आत्म–साक्षात्कार देने की योग्यता है। आपमें यह क्षमता है– आपमें यह क्षमता है। स्वयं में विश्वस्त रहें कि आप लोगों को आत्म–साक्षात्कार दे सकते हैं और इसके लिए आपको किसी भी प्रकार की सहायता की आवश्यकता नहीं है। अकेला सहजयोगी ही इस कार्य को कर सकता हैं। हज़ारों सहजयोगी इस कार्य को कर सकते है। पूरे विश्व की दिवाली के लिए यह आवश्यक है कि हम सभी लोगों को आत्म–साक्षात्कार दें। ऐसा करना बहुत आवश्यक है। सहज–योग में ऐसे बहुत से लोग हैं जो थोड़े से निराश हैं, विशेष रूप से अपने भूतकाल को लेकर। बीते हुए समय को भूल जाएं, भूतकाल महत्वपूर्ण नहीं है। वर्तमान महत्वपूर्ण है–कि इस क्षण आपने क्या करना है। भूत की आपको चिन्ता नहीं करनी–कि यह किया, मैंने वह किया। जो हो गया वो हो गया। अब भविष्य की ओर देखें। भविष्य के विषय में आप क्या कर सकते है।?जब आपको प्रकाश प्राप्त हो जाएगा तो किसी न

किसी तरह से आप अपना मार्ग देख लेंगें! सारे अंधकार से मुक्ति पा लें और समझें कि किस सीमा तक जाना है, किस प्रकार लोगों से मिलना है, और किस प्रकार सहजयोग को फैलाना है।

यह शक्ति तो आपके अन्दर पहले से ही विद्यमान है परन्तु सर्वप्रथम आपको इससे अपना तार जोड़ना होगा। इस सागर से यदि आप अपना तार जोड़ लेते हैं तो आप निश्चित रूप से कार्य कर सकते हैं। अत्यन्त सुन्दर ढ़ंग से इसे कार्यान्वित कर सकते है, अपनी सफलता को देखकर आप आश्चर्यचकित रह जाएंगे। इस अंधकार से मुक्ति पा कर आप हैरान होगें कि आप ज्योतिर्मय हो गए हैं और अपनी ज्योति से सारे अन्धकार को दूर कर दें। इसके विषय में आपको सोचना नहीं है। इस अन्धकार को निकाल फैंकें। परन्तु यदि आपके पास प्रकाश ही नहीं है तो इसके बारे में बातचीत करने का कोई लाभ नहीं और न ही इस कार्य को करने का कोई लाभ है क्योंकि बिना अन्तर्प्रकाश के आपको सफलता नहीं मिल सकती। इसके विपरित आप असफल हो जाएंगे, बुरी तरह से असफल होगें और यह लोगों के लिए खतरनाक साबित होगा।

इस देश में हमें बहुत से अटपटे अनुभव हुए परन्तु अब मैं सोचती हूँ कि एक एक करके वे सीख रहें हैं कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था, वह गलत था। कौन सी चीज़ आपको अन्धकार की ओर ले जाती है इसका पता लगाएं।

इस देश में, कहने से अभिप्राय है अमेरिका–ये इतना धनलोलुप देश है, जो पूरे विश्व में फैल कर भी धन–लोलुप है और आप इससे मन्त्र मुग्ध हो जाते हैं। आपको लगता है कि सहजयोग से भी आपको धन अर्जन करना चाहिए। कुछ लोग ऐसा नहीं सोचते फिर भी वे पैसे के पीछे दौड़ रहे हैं। धन एकत्र की कोई आवश्यकता नहीं और न ही धन में अपनी सुरक्षा ढूंढने की। आपकी सुरक्षा तो आपके अन्दर अन्तर्जात है। अतः यह बाहय चीज़ें पूर्णतः अनावश्यक हैं, इनसे आपकी आंखें चकाचौंध नहीं होनी चाहिए। आपमें यदि प्रकाश है तो ये बात आप स्पष्ट देख सकते हैं, अपने जीवन में परमेश्वरी सहायता को स्पष्ट देख सकते हैं कि किस प्रकार परमात्मा ने जीवन की भिन्न अवस्थाओं में आपकी सहायता की।

मुझे पत्र मिलते हैं कि 'श्री माताजी आपका बहुत–बहुत धन्यवाद, मुझे मेरी समस्याओं से निजात मिल गई। मुझे शत्रुओं से मुक्ति मिल गई' – आदि आदि – जब कि मैंने तो उनके लिए कुछ भी नहीं किया होता। आपके अन्दर के प्रकाश ने ही आपके अन्धकार को दूर किया है आप यदि अन्धकार में हैं तो केवल प्रकाश ही आपके अज्ञानान्धकार को दूर कर सकता है। वास्तव में आपको इस बात का ज्ञान नहीं है कि प्रकाश कितना शक्तिशाली है। आप यहाँ देख सकते हैं

कि हर ज्योति न केवल इतनी सारी ऊर्जा दे रही है बल्कि पूर्ण तस्वीर भी दिखा रही है। इसी प्रकार से आप भी समझ सकते हैं उदाहरण के रूप में आप यह बात समझ सकते हैं कि अन्य व्यक्ति आत्म– साक्षात्कारी है या नहीं। उसके समीप जाने की या कोई विशेष सावधानी आदि बरतने की कोई आवश्यकता नहीं। आप तो बस जान जाएंगे कि वह आत्म–साक्षात्कारी हैं या नहीं। मुझे ऐसे बहुत से अनुभव हैं जहां मैंने जान लिया कि लोगों को इस बात का ज्ञान ही नहीं है कि कौन आत्म–साक्षात्कारी नहीं है। यह आश्चर्य की बात है। आप यदि जानते हैं कि कौन आत्म–साक्षात्कारी है तो आपकी आधी समस्याएं समाप्त हो जाती हैं।

दूसरी समस्या किसी को यह समझाना है कि उसमें कौन सा कार्य करने की योग्यता है। यह समस्या मैं सहजयोगियों में भी पाती हूँ। वे विश्वभर में महान कार्य करने में सक्षम हैं। वो बहुत सी ऐसी चीज़ों का पता लगा सकते हैं जो प्रायः सामान्य लोग नहीं लगा सकते। परन्तु सहजयोगी तुरन्त जान सकते हैं कि उनके सामने किस प्रकार का व्यक्ति है। यही अन्तर है। इसका अर्थ यह है कि आप सत्य जानते हैं–किसी भी स्थिति के विषय में। यह सत्य भी जानते हैं कि कौन शेखी बघार रहा है या किसी प्रकार की कहानी कर रहा है या पाखंड कर रहा है। यह कार्य कठिन नहीं हैं। क्योंकि अब आपको दृष्टि मिल गई है। अपने प्रकाश से आप देख सकते है कि कहां कमी है या किसमें क्या अच्छाई है। आपके लिए यह ऐसा आशीर्वाद है कि आप धोखा नहीं खा सकते क्योंकि परमात्मा आपकी देखभाल कर रहें हैं आपका पथ प्रदर्शन कर रहे हैं। परमात्मा में विश्वास रखें, ऐसा करना बहुत आवश्यक है, वैसे ही जैसे दीपक के प्रकाश में आपका विश्वास है। विश्वास रखें कि परमात्मा आपको प्रकाश प्रदान करेंगे, आपका पथ प्रदर्शन करेंगे, आपको उचित स्थान पर ले जाएंगे और सभी शुभ कार्य करेंगे। कहने से मेरा अभिप्राय यह है कि आपके पास ऐसे बहुत से अनुभव हैं। मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि लोगों ने मुझे कितने पत्र लिखे और किस प्रकार उनकी चीज़ कार्यान्वित हुई। इस सबके बावजूद भी हम सामूहिक हैं, एक दूसरे के प्रति प्रेममय हैं, हम झूठ नहीं बोलते, किसी को समाप्त करने का प्रयत्न नहीं करते। इसका अर्थ यह है कि हम सामान्य मानव की भावनाओं से कहीं ऊँचे हैं और ऐसा होना उस प्रकाश के कारण है जो हमें प्राप्त हुआ। आप देख सकते हैं कि कहां पर आप लड़खड़ा रहें हैं। आप स्वयं अपने लिए इस चीज़ को देख सकते हैं। इसके लिए मैं सोचती हूँ ध्यान धारणा अत्यन्त आवश्यक कार्य है।

प्रतिदिन आपको ध्यान धारणा करनी

चाहिए। जो लोग ध्यान धारणा नहीं करते उनका पतन होने की संभावना होती है क्योंकि ध्यान धारणा तो दीपक में तेल डालने जैसा है। जो लोग ध्यान धारणा नहीं करते वो सोचते हैं कि इसके बिना चलेगा, ऐसे लोग बहुत भयानक गलत फहमी में हैं। उन्हें सुबह शाम ध्यान करना होगा। वास्तव में उन्हें सभी कुछ इतनी सुगमता से, इतने सहज में प्राप्त हो जाता है कि उनकी समझ में ही नहीं आता कि ध्यान धारणा कितनी आवश्यक है। आप लोग नहीं, परन्तु मैं ऐसे बहुत से लोगों को जानती हूँ जो आत्म-साक्षात्कार लेते हैं परन्तु ध्यान धारणा नहीं करते। उनकी शैली ही बिल्कुल अलग है। उनका स्वभाव बिल्कुल भिन्न है।

ध्यान धारणा अत्यन्त सुखकर है – परमात्मा से एक रूप होने का एक अत्यन्त सुन्दर उपाय। ध्यान धारणा के उस क्षण में आपकी सारी समस्याएं सुलझ जाती हैं। आप यदि नियमित रूप से ध्यान धारणा नहीं करते तो हो सकता है आपका प्रकाश कम हो जाए। इससे आपको पर्याप्त प्रकाश न मिले। ध्यान धारणा करते हुए अपने विषय में तथा अन्य लोगों के विषय में पता लगाना अत्यन्त आवश्यक है।

कई लोग पूछते है, "ध्यान धारणा किस प्रकार करें।" कुछ भी न करें, केवल निर्विचार समाधि में चले जाएं। निर्विचार समाधि में जाने का प्रयत्न करें। निर्विचार समाधि की अवस्था में यदि आप जा सकते हैं तो आप अपना कार्य कर सकते हैं क्योंकि केवल उसी स्थिति में आप सत्य के साथ होते हैं, वास्तविकता आनन्द तथा सभी दिव्य चीज़ों के साथ होते हैं।

ध्यान धारणा करते हुए इसे उत्सव में परिवर्तित न कर दें-न। ध्यान धारणा तो आपके अन्दर की शान्त स्थिति है, विचारों की शान्ति और उस सागर की गहनता में जाना जो आपके अन्तरिर्थत है। आप यदि ध्यान धारणा नहीं करते तो अपनी स्थिति की कल्पना करें। मैं तुरन्त जान जाती हूँ कि कौन ध्यान करता है और कौन नहीं। मेरे लिए यह कार्य कठिन नहीं है।

जो लोग ध्यान धारणा नहीं करते वे सदैव हिचकिचाते रहते हैं। सदैव किंकर्त्तव्यमूढ़ होते हैं। वे कुछ भी समझ नहीं पाते। यही कारण है ध्यान धारणा अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। विद्युत प्रवाह जब तक बना रहता है तभी तक प्रकाश होता है। दीपक में जब तक तेल जलता है वह प्रकाश देता है। इसी प्रकार से परमात्मा की शक्ति को निरन्तर प्रवाहित करने के लिए ध्यान धारणा है। ध्यान धारणा आपके अन्दर के चिड़चिड़ेपन को कम कर देती है। केवल इतना ही नहीं, सभी नकारात्मक विचारों को दूर कर देती है। निराश करने वाली सभी चीज़ों को अन्दर से निकाल फेंकती है। इस प्रकार से जब निर्विचार समाधि की अवस्था में आप ध्यान करते हैं तो आप हैरान

होते हैं कि किस प्रकार से अन्दर और बाहर से आपको सहायता प्रदान की जाती है। यह महान शक्ति है जो कार्य करती है–यह निर्विचार चेतना (Thoughtless Awareness).

अतः जो लोग ध्यान धारणा नहीं करते उन्हें सहजयोग के पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं होते। एक बार ध्यान धारणा द्वारा जब आप निर्विचार चेतना के स्तर तक पहुँच जाते हैं तो आपके साथ क्या घटित होता है? निर्विचार चेतना की अवस्था में जब आप होते हैं तो आपमें आत्मविश्वास जाग उठता है–परमेश्वरी शक्ति का पूर्ण आत्मविश्वास। आपको इस बात का ज्ञान होता है कि आपमें यह आत्मविश्वास है। हमारे धर्मशाला स्कूल से आए बच्चों को मैंने देखा है कि उनमें कितना आत्मविश्वास है और कितनी विनम्रता।

ध्यान धारणा आपको सुरक्षा प्रदान करती है। यह आपको आपका वास्तविक आत्म–साक्षात्कार तथा परमात्मा से पूर्ण योग प्रदान करती है। परमात्मा से एकतार हुए बिना सहजयोग का क्या लाभ है? मैं जानती हूँ कि ध्यान धारणा करने वाले लोग अत्यन्त गहनता में पहुँच जाते हैं और अत्यन्त विकसित होते हैं। मैं ऐसे लोगों को भी जानती हूँ जो कुछ सतही (Superficial) हैं। आपकी गहनता तो निर्विचार समाधि में ही है। इस बिन्दु तक पहुँचना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। निर्विचार चेतना में रहते हुए किसी चीज़ को यदि आप देखते हैं तो आप वास्तव में इसके प्रति बिम्बक (Reflecter) बन जाते हैं ऐसे ही कार्यान्वित होती है। मैं नहीं जानती कि कितने समय तक आप उस स्थिति में रह पाते हैं। परन्तु एक क्षण के लिए भी यदि आप उस अवस्था को प्राप्त करते हैं तो यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। ध्यान धारणा के विषय में मैं पहले भी बहुत कुछ बता चुकी हूँ। परन्तु आज ये सब जलते हुए दीपक देखकर मुझे लगता है कि ये ध्यान मग्न हैं। ध्यान धारणा में स्थापित होने के कारण ही यह उन्नत हो रहे हैं।

इसी प्रकार से मैं जानती हूँ कि कौन सहजयोगी ध्यान धारणा करते हैं और कौन नहीं। उन्हें यदि समस्याएं होती हैं तो मैं जानती हूँ कि उनकी समस्याओं का कारण क्या है। परमात्मा से आपका सम्बन्ध ही मुख्य चीज़ है और यह केवल तभी संभव है जब आप निर्विचार चेतना में स्थापित हो जाएं। यही वह बिन्दु है जहां पर आपका मस्तिष्क कार्य करता है यह सहायता देता है। इस प्रकार से वे आपकी सहायता के लिए आता है कि आपकी समझ में नहीं आता कि कैसे आपने इसे प्राप्त कर लिया।

अतः निर्विचार समाधि की अवस्था प्रथम स्थिति है जो आपने प्राप्त करनी है। यह बहुत आवश्यक है। इसके पश्चात् ही आप कुछ और प्राप्त कर सकते हैं। पहला कदम तो निर्विचार चेतना में जाना

है। निर्विचार समाधि अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि तभी बाएं और दाएं से कोई विचार नहीं आता (न भूतकाल का और न ही भविष्य काल का) और आप वर्तमान में आ जाते है।

आप सबने यह अवस्था प्राप्त करनी है। ऐसा नहीं है कि मैं आपसे कह रही हूँ। आप सबमें यह विद्यमान है। आपने बस इसमें स्थिर होना है। निर्विचार समाधी की स्थिति में आपने स्वयं को स्थापित करना है। कितनी देर के लिए–यह बात नहीं है। मुख्य चीज़ तो यह है कि एक बार जब आप इसे छू लेंगे तो आप इसे छूते ही चले जाएंगे।

बहुत से लोग ध्यान धारणा करते हैं परन्तु उनके अन्दर विचार प्रवाह चलते रहते हैं। ऐसे लोग निर्विचार चेतना की स्थिति में नहीं होते। ये घटित होना बहुत महत्वपूर्ण है। आपको यदि उन्नत होना है तो निर्विचार समाधि के माध्यम से परमात्मा से जुड़ जाना बहुत ही जरूरी है। आपको कोई पैसा नहीं देना पड़ता, किसी को बुलाना नहीं पड़ता–नहीं कुछ नहीं। ये तो बस कार्य करता है क्योंकि ये आपके अन्दर स्थित है। विचारों के बम्ब दो ओर से आप पर पड़ते रहते हैं। आपके अन्दर आने वाले विचार अर्थहीन हैं। ये आपको पोषण नहीं प्रदान करतें। अपने आप में ही आप एक सागर हैं तथा आपको निर्विचार चेतना की अवस्था प्राप्त करनी है। इसका वर्णन सभी महान ग्रन्थों में किया गया है परन्तु यह इतना स्पष्ट नहीं है जितना स्पष्ट रूप से मैं आपको बता रही हूँ। मैं यह नहीं कहती कि आपमें से जिन लोगों को निर्विचार चेतना की स्थिति प्राप्त नहीं होती वो बेकार हैं–नहीं। परन्तु कृपा करके इसे प्राप्त करने का प्रयत्न करें। आप सभी निर्विचार समाधी की अवस्था प्राप्त कर सकते हैं। एक पल के लिए भी यदि आप इस अवस्था को प्राप्त कर लें तो यह भी बहुत अच्छी उपलब्धि है। बाद में इसी पल को बढ़ाते चले जाएं।

मेरे विचार से मस्तिष्क प्रतिबिम्बक है। किसी चीज़ को जब आप देखते हैं तो आप निर्विचार चेतना में चले जाते हैं। और तब आपका मस्तिष्क विचलित होकर आपकी देखी चीज़ की गहनता में जाता है। इस प्रकार से आप सभी वास्तव में अत्यन्त सृजनात्मक सहजयोगी बनेंगे।

मैं क्या देखती हूँ कि यह निर्विचार समाधि की इस अवस्था को आप स्थापित नहीं कर पाते। यह बात ठीक नहीं है आज दिवाली के दिन मैं कहना चाहूँगी की स्वयं को निर्विचार समाधि से ज्योतिर्मय बनायें। यह कार्य कठिन नहीं है। यह स्थिति आप के अन्दर है। क्योंकि विचार तो या तो इधर से आते है या उधर से। ये आप के मस्तिष्क की लहरियाँ नहीं हैं। नहीं! ये तो आपकी प्रतिक्रियाएं हैं। परन्तु वास्तिवकता में आप ध्यान धारणा करते हैं। तो आप निर्विचार चेतना में चले जाते

है यही स्थिति प्राप्त करना आवश्यक है। और तब आपके मस्तिष्क में आने वाले मूर्खतापूर्ण विचार एवम् व्यर्थ विचार समाप्त हो जाते हैं! इन विचारों के समाप्त होने पर ही आप का उत्थान सम्भव है, केवल तभी आप उन्नत होते हैं।

यहाँ पर ऐसे बहुत से लोग हैं जो कहेंगे, "श्री माताजी हमें वह स्थिति प्राप्त नहीं होती।" प्रयत्न करें, इसे पाने का प्रयत्न करें। मैं नहीं समझती कि आप यह स्थिति नहीं प्राप्त कर सकते। आप सभी लोग दृढ़ निश्चय कर सकते हैं कि मैं यह स्थिति प्राप्त कर सकता हूँ और तब आपको यह स्थिति प्राप्त हो जाएगी। इस स्थिति में न तो आपको कुछ त्यागना है और न ही किसी चीज़ को देखना है। बस ध्यान में चले जाएं और आप आश्चर्यचकित होंगे कि यह किस प्रकार कार्यान्वित होता है।

निःसन्देह आप लोग उस स्थिति तक पहुँच चुके है, आपमें से अधिकतर लोग, परन्तु मैं कहूँगी कि निर्विचार समाधी की स्थिति को और बढाएं। इस क्षेत्र को और विस्तृत करें। आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि आज दिवाली है। दिवाली प्रकाश का दिन होता है। परन्तु अन्तर्प्रकाश तो केवल इस बात पर निर्भर करता है कि आप कहां तक निर्विचार चेतना में हैं। केवल तभी सभी कुछ कार्यान्वित होता है क्योंकि आप ही इसके सागर है। आपके अन्दर यह अवस्था विद्यमान है। आपने तो केवल इसको उपयोग में लाना है। यदि आप इसे उपयोग में नहीं लाते तो यह कार्यान्वित नहीं होती। इसे उपयोग में लाएं तो आप हैरान होंगे कि आप कितनी महानता एवम् प्रसन्नता के स्रोत हैं।

अतः आज का सन्देश यह है कि ध्यान धारणा करते हुए निर्विचार चेतना में जाए। कोई भी विचार महत्वपूर्ण नहीं हैं क्योंकि विचार तो आपकी अपनी रचना है। परन्तु यदि आपने दिव्य रचना बनना है तो आपको निर्विचार समाधि की अवस्था प्राप्त करनी ही होगी–यह कम से कम आवश्यकता है। जैसे–जैसे आप उन्नत होते हैं यह अवस्था शनैः शनैः आपके अन्दर स्थापित होती है। तब आप हैरान होगें कि कितने जोर से सहजयोग में उन्नत होने की योग्यता आपमें आ गई है।

आपका अत्यन्त धन्यवाद।

श्री माताजी का एक पत्र

मार्च, 1982

प्रिय श्री राहुल,

मुझे दामले जी का पत्र प्राप्त हुआ जिसमें उन्होनें सभी कुछ विस्तार पूर्वक लिखा। आपका श्री गगन गढ़ महाराज से जाकर मिलना अत्यन्त विवेकशील कदम था। सहजयोग के चमत्कार के विषय में जो उन्होनें कहा वो पूर्णतः सत्य है। आज तक इस महान दैवी वरदान के प्रकट न होने का वास्तविक कारण ये है कि जब–जब भी आदिशक्ति अवतरित होकर पृथ्वी पर आई तो उन्होनें सभी चक्रों को सहस्रार के माध्यम से एकतार नहीं किया। उनके व्यक्तित्व रूपी यंत्र में संघटित पूर्ण सामंजस्य एवं एकरसता ही ये सारे आश्चर्यजनक परिणाम प्रदान कर रही है। यहाँ तक कि मैं

अपने आप पर हैरान हूँ। मैं सोचती हूँ कि गगन-गढ़ महाराज भी इस अद्वितीय खोज के गतिविज्ञान (**Dynamics**) की कल्पना नहीं कर सकते। यही कारण है कि उन्हें लगता है कि अवधूतों को दूर जंगलों में होना चाहिए तथा यह भी कि कैंसर की प्रतिक्रिया आप पर हो सकती है। आपने फड़के का कैंसर रोग दूर कर दिया है। परन्तु क्या इसकी कोई प्रतिक्रिया आप पर हुई? (चैतन्य) देने के छोर पर जब आप होते हैं तो बहाव आपसे दूसरे व्यक्ति की ओर होता है उसकी ओर से नकारात्मकता आप की ओर कैसे आ सकती है? कमल के रूप में आपको पुनर्जन्म दे दिया गया है और कमल वातावरण से किसी भी प्रकार की गन्दगी अपने ऊपर नहीं आने देता। बल्कि अपने सौन्दर्य और सुगन्ध से वातावरण को बेहतर बनाता है। आत्म-साक्षात्कारी व्यक्ति का भी यही चमत्कार है। क्या आप सोचते हैं कि चिकित्सक इस सत्य को स्वीकार करेंगे कि परमात्मा का साम्राज्य है। यही हमारा सृजन करता है तथा आत्मा ही हमारे स्वचालित नाड़ीतंत्र (**Autonomous Nervous System**) की स्वामी है, तथा आत्मा परमात्मा का प्रतिबिम्ब है। आप श्री बोस, श्री दफ्तरी और श्री शर्मा का उदाहरण दे सकते हैं जिन्हें सहजयोग के माध्यम से रंग अन्धता (**Colour Blindness**) रोग से मुक्ति प्राप्त हुई। जो भी हो अगले वर्ष मैं अमेरीका जा रही हूँ। मेरा एक प्रिय पुत्र डाक्टर लांजेवर अब न्यूयार्क चिकित्सक संस्थान (**Medical Practioners' Association of New York**) का अध्यक्ष बन गया है और वह अगले वर्ष न्यूयार्क में चिकित्सा संगोष्ठी करने के लिए बहुत उत्सुक है। इतने वर्षों की हमारी दासता के कारण भारत के चिकित्सक ये भूल बैठे हैं कि हम योगभूमि पर अवतरित हुए हैं। उनके विचार दास-भावना से इतने प्रभावित हैं कि वो सोचते है कि चिकित्सा के विषय में हमारे सभी विचार मूर्खतापूर्ण हैं तथा पाश्चात्य ज्ञान अत्यन्त विवेकशील है। हृदय से मैं आपको आशीर्वादित करती हूँ कि रामा लिंगम को बहुत अच्छी चैतन्य-लहरियाँ मिल गई। उनके अन्तः स्थित श्रीराम उन्हें सर्वशक्तिमान परमात्मा के तौर-तरीकों को समझने का विवेक प्रदान करेंगे। मैं तुम्हें अपना प्रेम एवं सुरक्षा भेजती हूँ ताकि तुम चिकित्सक लोगों के अंधकार की बाधाओं को तोड़ सको। उन्हें ये समझ लेने दो कि अब समय आ गया है जब वो इस बात को स्वीकार कर लें कि विज्ञान ही सभी कुछ नहीं है। विज्ञान केवल उसी चीज़ को खोजता है जिसका पहले से अस्तित्व हो और जो स्थूल दृष्टि को दिखाई देता है। चतुर्थ आयाम में उन्नत होते हुए जब हम सूक्ष्म हो जाते हैं तो सूक्ष्म अस्तित्व को - आत्मा और संतोष को देख सकते हैं तथा ये भी कि वाद-विवाद द्वारा दैवी प्रेम के इस कार्य को नहीं किया जा सकता। व्यक्ति को आत्म-साक्षात्कारी होना पड़ेगा। सहजयोग के माध्यम से स्वतः

ही व्यक्ति उन्नत होगा क्योंकि यह जीवन्त प्रक्रिया है।

कैंसर का सर्वोत्तम उपचार जल है अर्थात् पैरों को नदी, समुद्र या घर में फोटोग्राफ के सम्मुख बैठकर जल में डालना है (जल पैर क्रिया)। स्वच्छ करना जल का धर्म है इसलिए मानव में धर्म के जिम्मेदार देवता श्री विष्णु और दत्तात्रेय की पूजा की जानी चाहिए। रोग मुक्त होने में वे आपकी सहायता करते हैं। इसके साथ-साथ जिस चक्र में खराबी है उसके अधिशासी देवता की भी पूजा होनी चाहिए। फोटो के सम्मुख दीपक जलाकर रोगी के पैर पानी में डालकर उसे बैठा दें। अनुकम्पी नाड़ी तंत्र पर से अपने हाथ नीचे पानी की ओर लाएं। शनैः शनैः रोगी की गर्मी शान्त हो जाएगी। यदि उसे आत्म-साक्षात्कार हो जाता है तो वो रोगमुक्त हो जाएगा। इसके आगे अगले पत्र में।

प्रेम पूर्वक आपकी माँ निर्मला

सूर्यसम आत्मा

18-06-1983

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के प्रवचन से उद्धृत

इतने सारे सहजयोगियों के बीच यहां आकर मैं अत्यन्त प्रसन्न एवं आनन्दित हूँ। इनमें से बहुत से लोग नए हैं, मेरे लिए बहुत नए नहीं हैं। संभवतः मैं उन्हें हजारों वर्षों से जानती हूँ।

सहजयोग में आप सबको एक साधारण सी बात समझनी होगी कि आप आत्मा हैं और जो भी कुछ आत्मा नहीं है वो आप नहीं हैं।

आत्मा की तुलना हम सूर्य से कर सकते हैं। सूर्य बादलों से आच्छादित हो सकता है। सूर्य को ग्रहण लग सकता है। परन्तु वह अपने स्थान पर स्थिर रहता है। सूर्य को आप ज्योतिर्मय नहीं कर सकते। वह तो अपने आप से ही प्रकाशमान है। बादलों को यदि हटा दिया जाए तो आच्छादन समाप्त हो जाता है और सूर्य एक बार फिर वातावरण में चमक उठता है।

इसी प्रकार से हमारी आत्मा भी अज्ञानान्धकार से आच्छादित हो जाती है और यह आच्छादन जब तक रहता है आप आत्मा को देख नहीं सकते। चाहे थोड़े से बादल हट भी जाएं तो भी आच्छादन बना रहता है। आत्मा के प्रकाश को चमकते हुए देखने के लिए आकाश का पूर्णतः साफ होना आवश्यक है।

बहुत से तरीकों से ये बादल हटाए जाने का प्रयत्न किया जा सकता है। इनमें से सर्वप्रथम है ये मान लेना, ये विश्वास कि हम आत्मा हैं और बाकी सब कुछ आच्छादन मात्र। अपने अन्तस में यह निश्चय करना होगा। आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् यह समझ लेना अत्यन्त आसान हो जाता है कि आप जो हैं उससे कहीं अधिक हैं, जो आपने अब तक स्वयं को समझा उससे कहीं भिन्न हैं।

तो नई अवस्था अब जो आती है उसमें आपमें अन्धविश्वास नहीं रह जाता। अब आपका विश्वास आपके अनुभव की देन है। अतः आपकी बुद्धि को उससे झगड़ा नहीं करना चाहिए, उसको चुनौती नहीं देनी चाहिए। बुद्धि यदि अब भी आपके विश्वास को चुनौती देने लगती है और आप यदि अपनी बुद्धि की बात को सुनते हैं तो आपका पुनः पतन हो जाएगा।

आकाश में सितारे की झलक पाते ही वैज्ञानिक मान लेता है कि कोई सितारा है अतः इसी प्रकार आपके भी यदि अपने

आत्म–साक्षात्कार की झलक भर प्राप्त हो जाए तो कम से कम आपको ये बात मान लेनी चाहिए कि आप भी आत्मा हैं। उस अनुभव पर डटे रहें और अपने चित्त को इस सत्य पर लगाए रखें कि आप आत्मा हैं। अपनी बुद्धि से कहें कि वह अब आपको और अधिक धोखा न दे। इस प्रकार आप अपनी बुद्धि के दिशा को मोड़ सकते हैं। वह अब आपकी आत्मा की खोज आरम्भ कर देगी। विश्वास का यही अर्थ है। विश्वास शुद्ध बुद्धि को उन्नत कर देता है।

साकार और निराकार

अब एक बार चाहे आपने बादलों को दूर होते हुए देख लिया हो फिर भी अभी बादल हैं। तो बादलों को उड़ाने के लिए आपको पवन का उपयोग करना होगा – आदिशक्ति की शीतल लहरियों का **(Wind of the Holy Ghost)**। आप जानते हैं कि इस शीतल पवन का लाभ उठाने के बहुत से उपाय हैं। अतः ये पवन किसी अन्य स्रोत से आती है। यह स्रोत आदिशक्ति का है, आपकी अपनी कुण्डलिनी का है और साकार रूप में भी आपके सम्मुख आदि कुण्डलिनी विद्यमान हैं। आपसे पूर्व जो अनन्त साधक आए आप उनसे कहीं अधिक सौभाग्यशाली हैं। क्योंकि किसी विग्रह की, किसी स्वयंभु मूर्ति की पूजा करने में लोगों को बहुत बड़ी समस्या होती थी। सर्वप्रथम उन्हें ध्यान धारणा करनी होती थी जो 'सविकल्प समाधि' कहलाती थी अर्थात् उस अवस्था में उन्हें उस मूर्ति पर, उस विग्रह पर ध्यान केन्द्रित करना पड़ता था – विग्रह का अर्थ है ऐसी मूर्ति जिससे चैतन्य लहरियाँ निकलती हों – और तब उस मूर्ति की ओर एकटक देखते हुए (त्राटक) अपनी कुण्डलिनी को उठाना पड़ता था। कुण्डलिनी आज्ञा तक पहुँच जाती थी लेकिन सहस्रार तक पहुँचना असंभव कार्य था क्योंकि यहाँ तक पहुँचने के लिए साधक को साकार से निराकार तक जाना पड़ता है। साकार से निकलकर निराकार तक पहुँचना बहुत कठिन कार्य था तथा निराकार पर चित्त को टिकाना ही (जिस प्रकार से कुछ मुसलमानों तथा कुछ अन्य लोगों ने करने का प्रयत्न किया) एक असंभव कार्य था।

इन परिस्थितियों में यह आवश्यक था कि निराकार (परमात्मा) साकार रूप धारण करें ताकि किसी भी प्रकार की जटिलताएं बाकी न रह जाएं। ज्यों ही आप साकार पर चित्त को टिकाते हैं, आप निराकार हो जाते हैं। बिल्कुल वैसे ही जैसे आपके सम्मुख यदि बर्फ हो और आप उस पर हाथ रख दें तो यह पिघल जाती है तथा आप इसकी शीतलता को अनुभव करने लगते हैं।

पूजा का अर्थ

इस प्रकार अब इतनी सरलता से समस्या का समाधान हो गया है। पूजा एक ऐसी क्रिया है जिसके माध्यम से

आप साकार को निराकार में परिवर्तित कर सकते हैं।

आपके चक्र ऊर्जा केन्द्र हैं परन्तु उन सब पर भी शासक देवी–देवता विराजमान हैं। उन्हें भी निराकार से साकार बनाया गया है। जब आप पूजा करते हैं तो साकार पिघलकर निराकार ऊर्जा का रूप धारण कर लेता है और यह निराकार ऊर्जा बहने लगती है तथा ये शीतल चैतन्य लहरियाँ प्रवाहित करती है। और इस प्रकार से आत्मा के ऊपर पड़ी हुई परतें तथा इसके विषय में अज्ञानता दूर हो जाती है।

पूजा के विषय में आप सोच नहीं सकते। ये चीज़ें एक ऐसे साम्राज्य **(Realm)** में घटित होती हैं जो विचारों की सीमा से परे है। आपको समझना होगा कि पूजा के विषय में आप तर्क नहीं कर सकते। अपने चक्रों पर आपने पूजा का अधिकाधिक लाभ उठाना है। इसके लिए पूरी तरह से आप पूजा पर चित्त लगाएं और अनुभव करें कि किस प्रकार से यह शीलत पवन बह रही है। बादलों को उड़ा ले जाना इस पवन का कार्य है। अतः आपका कार्य और आपका एकमात्र तरीका पूजा पर चित्त को लगाना है और इसका साक्षी होना है। आप दृष्टा **(Seer)** हैं। दृष्टा **(Seer)** शब्द के दो अर्थ हैं – एक जो देखता है, केवल देखता है और वह केवल ज्ञान है। बिना किसी विचार के, बिना किसी प्रतिक्रिया के वह दृष्टा केवल देखता है और स्वतः आत्मसात करता है। जिसमें स्वतः ये सब कार्य होता है केवल वही दृष्टा **(Seer)** है।

मेरे लिए कभी–कभी यह कठिन होता है क्योंकि आपमें और देवी–देवताओं में कुछ समानता होनी चाहिए, कुछ संतुलन तो होना आवश्यक है। यहाँ बैठे आप मन्त्र बोल रहे हैं, देवी–देवता जागृत हो गए हैं और आप हैं कि अपने हृदय में कुछ आत्मसात करना ही नहीं चाहते। तो पूजा में देवी–देवताओं के जागृत होने से उत्पन्न होने वाली सारी फालतू ऊर्जा को मुझे अपने शरीर में ही पुनः ग्रहण करना पड़ता है।

अतः बेहतर होगा कि आप सब अपने हृदय खुले रखें और साक्षी भाव से बिना कुछ सोचे पूजा को देखें .... ।

दिनांक : 12/02/2003
बाजपुर

सेवा में,

जय श्री माता जी,

मैं विगत पाँच वर्षो से सहजयोग कर रहा हूँ, सहजयोग से पूर्व और सहजयोग के बाद मैं अपने जीवन को पूर्ण परिवर्तित पाता हूँ। विद्यार्थी जीवन में ही मुझे वे सारे दोष लग चुके थे जो आज एक आम युवा को भीतर ही भीतर खोखला कर नर्क में धकेल रहे हैं। ये श्री माताजी की ही कृपा है जो आज मैं दूसरा जन्म पाया हूँ वरना न जाने कहाँ भटक चुका होता। सहजयोग आज मेरे जीवन का अंग बन चुका है। मेरा जीवन सहजयोग के बगैर शून्य है। सहजयोग ज्ञान का वो भण्डार है जिसका प्रारम्भ व अंत कहीं भी नहीं, बस अपार सागर है।

मैं उत्तरांचल राज्य के उद्यमसिंह नगर जिले व बाजपुर विकास खण्ड के हरिपुरा हरसान गाँव का निवासी हूँ व वर्तमान में जूनियर हाईस्कूल (प्राइवेट) विद्या निकेतन, हरिपुरा हरसान में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्य कर रहा हूँ। सहजयोग में कई चमत्कारों के बारे में सेमिनार व गणपति पुले में सुने किंतु जब वर्ष **2002** के शिवरात्रि पूजा के अवसर पर मैंने घर पर ही श्री माता जी की पूजा एक साधारण रूप ही में की और पूजा के बाद फोटो खींची तो श्री माता जी की फोटो पूरी तरह चैतन्य से ढकी पायी। इससे मैंने यह जाना की कि श्री माता जी अपने तुच्छ–से–तुच्छ भक्त पर भी ममता का सागर बिखेरती हैं और आशीर्वाद देती है। सच्चे मन से परमेश्वरी माँ का ध्यान किया जाये तो माँ परमानन्द देती हैं। आज मेरा जीवन हमेशा चैतन्य में व्यतीत हो रहा है और प्रयास करता रहता हूँ कि ऐसा अनुभव सभी सत्य के खोजी व्यक्तियों को हो।

''जय श्री माता जी''

धर्मेन्द्र सिंह बसेड़ा
ग्राम–पो० हरिपुरा हरसान
बाजपुर (उद्यमसिंह नगर)
उत्तरांचल–**262 401**
फोन : **05949-244 338**
9:00 से **4:00** बजे तक